महान् आर्य हिन्दू-जाति

विनाश के मार्ग पर

चतुरसेन गुप्त

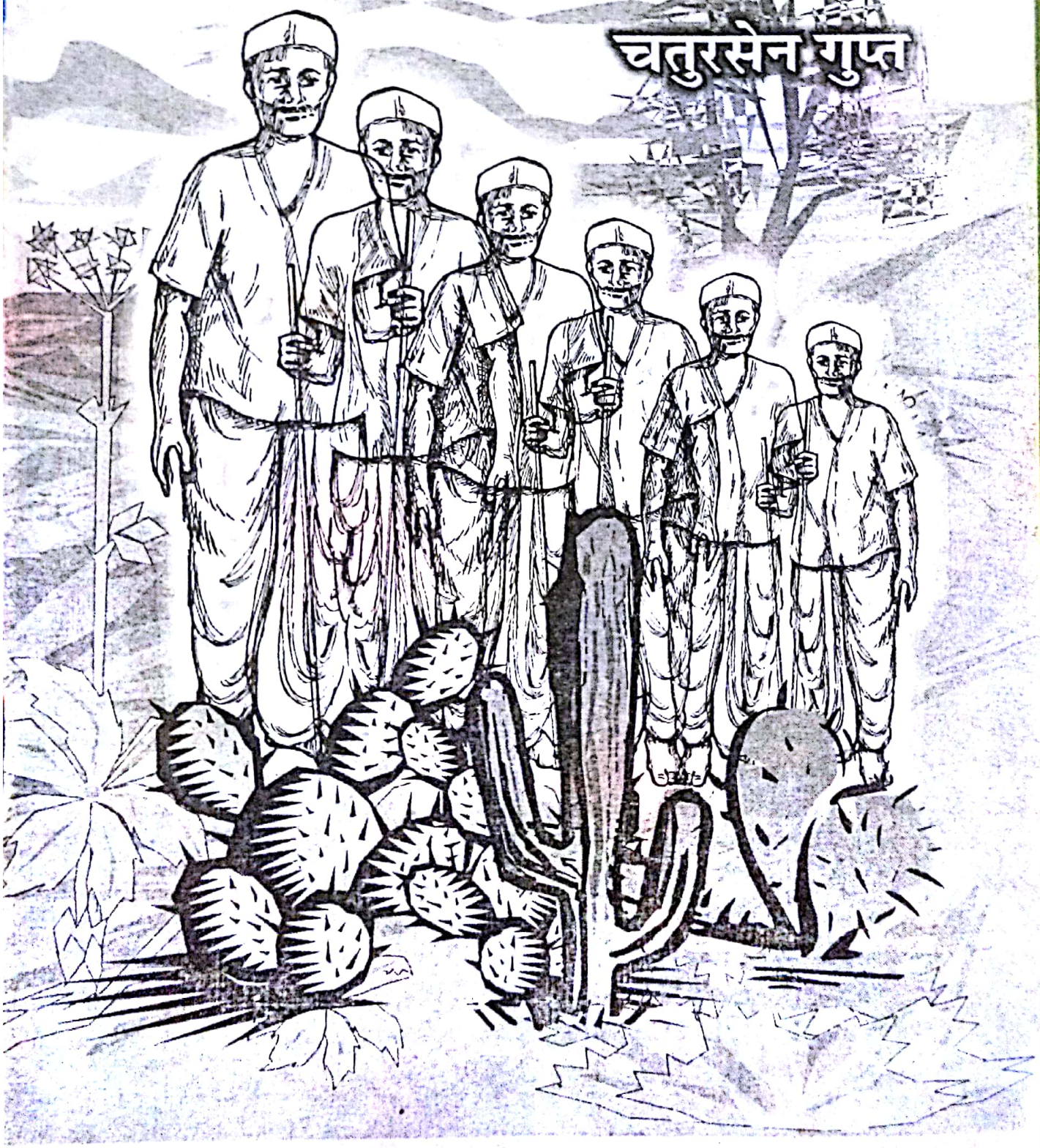

Scanned by CamScanner

इस पुस्तक के प्रकाशन में निम्न साहित्यप्रेमियों ने सहयोग दिया है

१०००/- श्री लक्ष्मीचन्दजी आर्य, प्रधान-आर्यसमाज, सैक्टर-१९, फरीदाबाद (हरियाणा)
५००/- श्री रामअवतारजी, फरीदाबाद शहर (हरियाणा)
५००/- श्री नकुलदेवजी चौधरी, फरीदाबाद (हरियाणा)
५००/- श्री भगवतप्रसादजी गुप्ता, फरीदाबाद (हरियाणा)
५००/- श्री एम० पी० श्रीवास्तवजी, भिण्ड (म०प्र०)

प्रकाशक : **श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट**
ब्यानिया पाड़ा, हिण्डौन सिटी (राज०)-३२२२३०
दूरभाष : ०७४६९-२३४६२४
चलभाष : ०-९४१४०-३४०७२

संस्करण : प्रथम, श्रावणी उपाकर्म, संवत् २०६२, (३००० प्रतियाँ)

मूल्य : ८.०० रुपये

प्राप्ति स्थान :
१. **टंकारा साहित्य सदन,** आर्यसमाज, हिण्डौन सिटी (राज०), दूरभाष : ०७४६९-२३४९००
२. **श्रेष्ठ साहित्य सदन,** सैंती, चित्तौड़गढ़ (राज०) शाखा-पहुँना, जि०-चित्तौड़गढ़ (राज०) दूरभाष :०१४७१-२२२०६४
३. **श्री हरिकिशन ओम्प्रकाश,** ३९९, गली मन्दिरवाली, नया बाँस, दिल्ली-११० ००६, दूरभाष-२३९५८८६४
४. **श्री दयारामजी पोद्दार,** झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज मन्दिर, स्वामी श्रद्धानन्द पथ, राँची (झारखण्ड)-८३४ ००१
५. **श्री प्रमोदकुमार शर्मा,** द्वारा श्री गणेशदास गोयल, २७०४, प्रेममणि निवास, गली पत्तेवाली, नया बाजार, खारी बावली, दिल्ली-६, दूरभाष: ०११-३०९४०६७८
६. **डॉ० श्री अशोकजी आर्य,** आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, मंडी डबवाली, जि०-सिरसा, (हरि०)-१२५१०४ दूरभाष : ०१६६८-२२७९३५

शब्द संयोजन : **भगवती लेज़र प्रिंट्स,** ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-६५

मुद्रक : **राधा प्रेस,** कैलाशनगर, दिल्ली-११० ०३१

Scanned by CamScanner

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक राष्ट्रीय सन्दर्भ में एक ऐसे चिन्तन को प्रोत्साहित करती है जिसके आधार पर सुखी-समृद्ध राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। वैसे तो लेखक ने इसे हिन्दू चिन्तन पर केन्द्रित किया है लेकिन हमारा मानना है कि इस देश का प्रत्येक नागरिक जो चाहे किसी भी विचारधारा से अनुप्राणित हो लेकिन उसका धर्म एक ही है और वह है राष्ट्रधर्म। राष्ट्रधर्म से बड़ा और कोई धर्म नहीं है अर्थात् यह प्रत्येक के लिए एक ही है चाहे वह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई या फिर किसी अन्य विचारधारा का माननेवाला हो। यह सम्भव नहीं है कि एक विचारधारा के माननेवाले का धर्म कुछ और हो तथा दूसरी विचारधारावाले का कुछ और। यानि राष्ट्रीयहित में सभी का कर्म-कर्त्तव्य एक ही होना चाहिए। यदि किसी भी स्तर पर दो विचारधारावालों में भेद किया गया तो यह पक्षपात होगा और इसका परिणाम विद्रोह होगा। इस पुस्तक का विषय इसी दोहरी नीति का परिणाम है और प्रत्येक व्यक्ति, समाज अपने अस्तित्व के लिए यत्न करेगा ही।

इस पुस्तक में हिन्दुओं को झकझोरने के लिए अनेक बिन्दुओं पर लेखक ने अपने विचार रखे हैं जो सटीक हैं। यह सही है कि विश्व को ज्ञान-विज्ञान में अ, आ सिखानेवाले आर्य अपने प्रमाद व अनुसन्धानवृत्ति के लोप के कारण परमुखापेक्षी हो गये हैं और इसके बिना किसी भी क्षेत्र में उन्नति-विकास सम्भव नहीं है। बहुत-सी सामाजिक कुरीतियाँ ऐसी रच-बस गई हैं कि भाइयों के मध्य स्नेह, मैत्री का स्थान कटुता-घृणा ने ले लिया है। आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों का दिशाहीन प्रयोग भी हमारी पीढ़ी की अवनति का कारण है। लेखक ने बहुत कुछ देखने-भोगने के पश्चात् अपनी पीड़ा से सबको एक-साथ कर सामूहिक सुख का प्रयास किया है।

वैसे किसी भी समाज या देश की एकता उसके एकीकृत संकल्प, व्यवहार व विचार पर निर्भर करती है। हमें यहाँ दूरदर्शी दयानन्द स्मरण होते हैं जिन्होंने सामाजिक कुरीति उन्मूलन, स्वच्छ आध्यात्मिकता के साथ प्रखर राष्ट्रीयता का प्रचार किया। एक विचार, एक अभिवादन, एक वेशभूषा, एक धर्मग्रन्थ, एक ईश्वर और बहुत-सी एक पर उन्होंने बल दिया। हम सभी को साथ लेकर चलने की बात करते हैं जो सुनने में कर्णप्रिय लगती है लेकिन परिणाम वही ढाक के तीन पात। इस पूरे सन्दर्भ में देव दयानन्द को समग्रता के साथ स्वीकार करने व तदनुकूल व्यवहार करने से ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का हित होगा अन्यथा स्थिति वही—रेत का महल बनाना व उसे गिरते देखना।

इस पुस्तक के प्रकाशन की प्रेरणा हमारे स्नेही आचार्य श्री आनन्दजी पुरुषार्थी होशंगाबाद (म०प्र०) ने की है और साथ ही इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय धरोहर राशि के रूप में प्रदान किया है। आपने हमें कुछेक पुस्तकों के प्रकाशन की प्रेरणा भी दी है। कुछ सहयोगी बन्धुओं का सहयोग मिला तो यह पुनीत कार्य भी सम्पन्न होगा ही। आपके स्नेहिल सहयोग की कामना सहित—

—प्रभाकरदेव आर्य

Scanned by CamScanner

महान् आर्य-हिन्दू जाति विनाश के मार्ग पर

भूतकाल

इसे कौन कह सकता है कि आर्यजाति का भूतकाल महान् नहीं था। आर्यजाति की दिग्विजय यात्रा भारत की सीमाओं में ही नहीं, भारत से बाहर चारों दिशाओं में थी। स्याम की राजधानी का नाम अयुथ्या (अयुध्या) रखा गया, स्याम के राजा के नाम के साथ राम आज तक लगा आ रहा है। फिलीपाईन की संसद के बाहर दो विशाल मूर्तियाँ हैं जिनमें से एक आर्यजाति के आद्य न्यायमूर्ति भगवान् मनु की है। इन्डोनेशिया में बाली टापू है जो रामायण से सम्बन्धित है। सारे राष्ट्र में रामायण और महाभारत की कथा और चित्रकला दीवारों पर अङ्कित है। इसीप्रकार अन्य राष्ट्रों में जाईये, आर्यजाति की महानता का कोई न कोई चिह्न अवश्य मिलेगा। हमारे राष्ट्र में विमान विभाग का नाम इन्डिया ऐयर लाईन्स है तो अफगानिस्तान में इसका नाम आर्याना ऐयर लाईन्स है।

आर्य साहित्य

आर्यजाति के महर्षियों की रचनाओं के बगदाद के खलीफाओं ने अपनी भाषाओं में अनुवाद कराये थे। हमारे आयुर्वेद के महान् ग्रन्थ जिनका नाम चरक और सुश्रुत है उनके अनुवाद बगदाद के शासक हारुँ रशीद ने करवाये जिनके नाम आज भी वहाँ की भाषा में चरक का ''सरक'' और सुश्रुत का ''सुसरो'' है।

यही नहीं भारत के प्राचीन राजनीतिज्ञ आचार्य विष्णुशर्मा का विश्व-विख्यात ग्रन्थ पञ्चतन्त्र संसार की सभी भाषाओं में अनूदित हुआ। अमरीका में पञ्चतन्त्र का प्रकाशन भारी संख्या में हुआ। अमरीका ने अंग्रेजी में ही नहीं—संस्कृत में भी प्रकाशित किया। इसी ग्रन्थ पर एक विद्वत्तापूर्ण टिप्पणी ग्रन्थ भी अमरीका ने प्रकाशित कराया। फारसी में 'कलेला दमन' पञ्चतन्त्र का ही अनुवाद है। काश्मीरी संस्कृतज्ञ विद्वान् ने राजनीति पर ''कथा सरित् सागर'' नामक महान् ग्रन्थ लिखा। जिसे लन्दनवालों ने अंग्रेजी अनुवाद करके १० जिल्दों में प्रकाशित किया। आचार्य चाणक्य का महान् ग्रन्थ ''कौटिल्य अर्थशास्त्र'' भारत से भी पहले जर्मनी में प्रथम बार प्रकाशित हुआ। जर्मनी विद्वान् मैक्समूलर ने तो यजुर्वेद का मूल संस्करण बहुत ही सुन्दर प्रकाशित किया था तथा वेदों के अंग्रेजी में भाष्य भी किये थे। मुस्लिम काल का शहजादा दाराशिकोह उपनिषदों का भारी भक्त था। भारत पर हमलावर महमूद गजनवी के साथ एक विद्वान् जिसका नाम अलबरूनी था, उसने आर्यजाति के महान् ग्रन्थ महाभारत, गीता, वाल्मीक रामायण, योगदर्शन और भास्कराचार्य के ग्रन्थ पढ़कर भारी आश्चर्य के साथ कहा था कि जिस आर्यजाति के पास महाभारत और रामायण जैसे महान् ग्रन्थ हैं वह मुट्ठीभर

Scanned by CamScanner

विदेशियों से कैसे पददलित होती रहती है।

१ से १० तक

१ से १० के अंकों की निर्माता आर्यजाति ही है। भारत से अरब में ये अंक गए और अरब से यूरोप में। आज भी आप भारत भर में किसी भी उर्दू के मास्टर से पूछें—इन अंकों का नाम ''हिन्दसा'' बतावेगा। उर्दू के पहाड़ों पर यह ''हिन्दसा'' ही छपा मिलेगा। आर्यजाति का यह महान् आविष्कार जिसे संसारभर के विद्वान् स्वीकार करते हैं जिससे न मुस्लिम विद्वान् मुकरते हैं और न यूरोप के। २० जून १९३२ को इन्दिराजी के नाम एक पत्र में नेहरूजी ने लिखा था कि—तुम्हें याद होगा कि ये असल में हिन्दुस्तान से अरब में गये थे।

इतना होने पर भी हतभाग्य आर्यजाति—हजारों वर्षों की गुलामी की जंजीर कटने पर भी आज तेरे अंकों को राष्ट्रभाषा से बहिष्कृत करके 1–10 अंग्रेजी अंकों को स्वीकार किया गया। और इन्हें अरबी अंक भी कहा गया। यह तथा अन्य ऐसी बातें हैं जिसे आर्यजाति की पराधीनता ही कहा जा सकता है। आज न चरक, सुश्रुत को राजकीय सम्मान प्राप्त है और न राष्ट्र की शिक्षा-पुस्तकों में पञ्चतन्त्र को कोई स्थान। वेद और उपनिषदों की तो बात ही क्या?

आविष्कारक आर्यजाति

दिल्ली में आइये और देखिए—आर्यजाति द्वारा निर्मित हजारों वर्षों का प्राचीन—विशाल **लोहस्तम्भ** जिसे देखकर संसार के इंजीनियर दङ्ग हैं, वह यह भी निश्चय नहीं कर पाये कि इस लोहस्तम्भ में कौन-कौन-सी और कितनी-कितनी धातुएँ मिलाई गई हैं जिसके कारण इसपर आज तक जंग नहीं लगा। सर्दी, गर्मी और वर्षा के इसने हजारों झटके झेले हैं। हजारों वर्षों में लाखों बार भूकम्प आये होंगे किन्तु यह लोहस्तम्भ आज तक हिला नहीं, हजारों बार बिजलियाँ गिरी होंगी, इसपर कुछ आँच नहीं। एक सनकी शाहन्शाह ने दिल्ली को ऐसा उजाड़ा कि दिल्ली में एक बिल्ली भी न रह पाई थी, किन्तु वह बादशाह भी इस महान् लोहस्तम्भ को छू नहीं सका। गत हजारों वर्षों में दिल्ली पर अनगिनत गोलाबारी हुई किन्तु यह अछूता ही खड़ा हुआ आर्यजाति की विज्ञान कला का नाम ऊँचा किए हुए है। आर्यजाति के अनेक ऐसे कलाकौशल के चिह्न भारतभर में आप जहाँ भी देखेंगे—आपको दर्शन देंगे। अजन्ता की गुफाएँ, चित्तौड़ का विजयस्तम्भ, उदयपुर की अगाध झील में महल, दिल्ली, जयपुर और काशी के ''जन्तर-मन्तर'' भारतभर में पर्वतों पर हज़ारों विशाल दुर्ग, भव्य मन्दिर और भवन यत्र-तत्र-सर्वत्र आप देखेंगे जिनके निर्माता न यूरोप से आये, न ईरान से, जिन्हें आर्यजाति के महान् विज्ञान विशारदों ने ही निर्मित किया था। इतना सबकुछ होने पर भी आर्यजाति का आज न गौरवगान गाया जाता है और न हम स्वयं अपने महापुरुषों के प्रति श्रद्धाञ्जलि ही अर्पित करते हैं।

Scanned by CamScanner

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

संसार को सभ्यता सिखानेवाली, ज्ञान-विज्ञान में सर्वोत्तम, राजनीतिज्ञों से भरपूर इस आर्यजाति का फिर पतन क्यों हुआ, क्यों इसपर विदेशी हमले होते रहे, क्यों यह मार खाती रही, क्यों विदेशी लोग हजारों वर्षों तक इसकी गर्दन पर तलवार के जोर से इसे पददलित करते रहे।

आर्यजाति के तीन महान् विश्वविद्यालय जिनमें नालन्दा विश्वविद्यालय शिरोमणि था, जिसमें १८००० (अठारह हजार) विद्यार्थी अध्ययन करते थे, जिसमें विभिन्न भाषाओं के १२०० अध्यापक पढ़ाते थे, जिसमें हजारों सेवाभावी सेवक थे, जिसमें पढ़ने-पढ़ानेवाले पवित्र गौ-दुग्ध और गौ-घृत भरपूर पीते-खाते थे, अन्न और फलों की तो वहाँ कमी ही नहीं थी। पढ़नेवालों पर फीस नहीं थी, अध्यापक वेतन की चिन्ता से मुक्त थे, इसके लिए न चन्दा और न भिक्षा की झोली फैलाई जाती थी। यह सारा प्रबन्ध राज्य करता था। प्रजा को शिक्षित करना राज्य अपने अनेक कर्त्तव्यों में से एक—शिक्षा को निःशुल्क और प्राथमिकता देता था। आप प्रश्न करेंगे कि इतना सबकुछ होने पर भी यह महान् आर्यजाति विदेशियों से कैसे पददलित होती रही। ऐसे विशाल विश्वविद्यालय का विध्वंस कैसे हुआ?

पतन के मूल कारण

भूतकाल में आर्यजाति के पतन के जो कारण थे वह तो आज भी ज्यों के त्यों हैं ही—किन्तु पतन के वह कारण भूतकाल से वर्तमान तक हजारों गुणा वृद्धि पर हैं और होते रहेंगे। यदि हमारी आँखें नहीं खुलीं तो।

१. उस समय राज्यलिप्सा में राजे परस्पर लड़ते थे तो आज के नेता राजलिप्सा से जनता को आये दिन लड़वाकर राष्ट्र का चकनाचूर कर रहे हैं।

स्वराज्य के २५ वर्षों* में नेताओं के कुचक्रों में फँसकर हजारों बार अस्पताल, रेल, बस, तार, पोस्ट, वायुयान, सरकारी दफ्तरों में हड़तालें, अग्निकाण्ड, खूनीकाण्ड, सरकारी, गैर सरकारी सम्पत्तियों का भयङ्कर विनाश, राजकर्मचारी विद्रोह, पुलिस विद्रोह आदि भयङ्कर काण्ड हुए हैं जिनमें अरबों रुपयों की हानि, हजारों लोगों की मृत्यु, लाखों बेघरबार—कोई हिसाब नहीं यह निरी कल्पना नहीं है—२५ वर्ष की जाँच कराकर देख लें। और यह भी निश्चय है कि यह सारा सत्यानाश हुआ है—महान् आर्य हिन्दूजाति का ही।

२. सम्राट् अशोक द्वारा अहिंसा अपनाने से विदेशी आक्रान्ताओं को खुली छूट मिल गई थी। चाहे जब आये और विशाल आर्यजाति को पैरों तले रौंदकर चले गए या यहीं जम गए। नालन्दा विश्वविद्यालय पर केवल २०० सिपाहियों ने हमला किया और सारे विश्वविद्यालय को भूमि पर रौंद डाला। दूध, घी खानेवाले मोटे-ताजे, हट्टे-कट्टे १८ हजार विद्यार्थी और १२ सौ

---

* यह पुस्तक सन् १९७१-७२ में लिखी गई।

Scanned by CamScanner

अध्यापक ऐसे भाग गए जैसे कोई बालक भिरडों के छत्ते में एक छोटी-सी कंकर फेंक देता है तो मनुष्यों को काटखानेवाली मक्खियाँ छत्ता छोड़कर भाग जाती है। यही दशा अहिंसक हिन्दूजाति की हुई। आजतक भी यह कृत्रिम अहिंसा हमारे पीछे पड़ी हुई है।

आश्चर्य तो यह है कि अहिंसा के महान् आदर्श का भयङ्कर दुरुपयोग किया जा रहा है। आततायी रिवालवर लेकर हिन्दू को मारने आवे और हिन्दू अहिंसा-अहिंसा कहकर मर जावे। फिर मरनेवाले का यश गाया जावे और मारनेवाला भी अपने मतवालों में "गाजी" का पद पावे। बलिहारी है इस विचारधारा की।

अहिंसा के साथ ही वैराग्यवाद और अहम् ब्रह्मवाद ने भी कम हानि नहीं पहुँचाई। हिन्दूजाति में प्रतिदिन गीत गाये जाते हैं—

ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, यह दुनियाँ रैन बसेरा।

अर्थात् इनकी दृष्टि में राष्ट्र-रक्षा, राष्ट्र-निर्माण, राजधर्म कुछ नहीं। विदेशी हमपर राज करे और हम वैरागी बनकर राम-राम की माला जपते रहें। साथ ही नानापन्थों, मतों और पाखण्डों ने भी आर्यजाति के व्यापक टुकड़े-टुकड़े कर दिये थे और आज भी नये-नये पाखण्ड, मत और अनेक भगवान् इस हिन्दूजाति की एकता के सूत्र को तोड़ रहे हैं। जिससे हिन्दूजाति भयङ्कर निर्बल हो रही है और इसका लाभ विधर्मियों और विदेशियों को पूरा-पूरा हो रहा है।

आश्चर्य होता है आज कृष्ण के नाम लेवाओं पर—जिस कृष्ण ने अपने चक्र से शिशुपाल का सिर काट दिया, आततायी जरासन्ध को मरवाकर ८८ राजाओं को कैद से मुक्त करा दिया और सती द्रोपदी के अपमान का बदला कौरवों का संहार कराके लिया था। उसी कृष्ण के भक्त आज चक्र छोड़कर गाते फिरते हैं—

हमें क्या काम दुनिया से, हमें तो कृष्ण प्यारा है।

प्रसङ्गवश यहाँ महाभारत की एक घटना को भी लिखे देता हूँ। युद्ध के मैदान में विजय की कामना से कृष्ण ने युधिष्ठिर से "अश्वत्थामा हत:" कहलवा दिया इसकारण आजतक युधिष्ठिर को नरकवासी कहा जाता है। मुझे भी सम्पूर्ण महाभारत के पारायण और प्रकाशन का सौभाग्य प्राप्त रहा है—मेरी जानकारी में यह झूँठ तो कृष्ण ने बुलवाया था, महाभारतकार ने कृष्ण को नरक न भेजकर युधिष्ठिर को भिजवा दिया, किन्तु युधिष्ठिर ने अनेक प्रसङ्गों में स्वयं झूँठ बोला और भाईयों से बुलवाया इसपर कोई भी नरक में नहीं गया।

मैं तो यह मानता हूँ कि युद्ध के मैदान में और राष्ट्ररक्षा के लिए किसी भी कारण से क्षत्रिय के लिए झूँठ बोलना न अधर्म है और न नरक में जाना।

इस घटना का परिणाम ५ हजार वर्षों से हिन्दू राजा और प्रजा को भोगना पड़ रहा है। हमारी राजनीति और रणनीति को दूषित किया, जिससे हिन्दूजाति की गर्दन पर विदेशियों की तलवारें लटकती रहीं और आज भी

Scanned by CamScanner

लटक रहीं हैं।

आर्य हिन्दूजाति के संहार का एक बड़ा कारण यह था कि क्षत्रिय जातियाँ परस्पर लड़ती रहीं और तीसरा विदेशी पञ्च बनकर इन लड़ाकू वीर क्षत्रियों को अपना गुलाम बनाकर राज्य करता रहा। एक हजार वर्ष का इतिहास इन्हीं घटनाओं से भरा पड़ा है। पृष्ठ के पृष्ठ और राजपूतों और वीर क्षत्राणियों के खून से लथपथ हैं। अनगिनत आर्यजाति के बहादुर तलवार के घाट उतरते रहे और अनगिनत आर्यजाति की वीर ललनाएँ जौहरव्रत की अग्नि में दग्ध होती रहीं। वे कायर, गुलाम बनते रहे, जो अपनी पुत्रियों को आततताइयों को भेंट करते थे।

हजारों वर्षों के इतिहास से सर्वनाश और पतन होता हुआ देखा है—उस महान् आर्यजाति ने, जिनके पूर्वज थे—भगवान् राम, भगवान् कृष्ण और आचार्य चाणक्य। यदि उस काल में आर्यजाति ने कृष्ण और चाणक्य की राजनीति पर आचरण किया होता तो सर्वनाश की दशा को क्यों प्राप्त होते। किन्तु आज भी तो सर्वनाश के मार्ग पर भगे चले जा रहे हैं।

इतिहास साक्षी है कि जिन राजाओं ने अपनी कन्या विधर्मियों को दी उनका आजतक इतिहास ने यश नहीं गाया। किन्तु आज जो हिन्दू ललना विधर्मी के पास जैसे-तैसे चली जाती है उसका राष्ट्र में सम्मान होता है, बधाई के तार पहुँचते हैं, उपहार दिये जाते हैं और दम्पत्ति को राज्य में ऊँचा मान-सम्मान प्रदान किया जाता है। ऐसी दशा में इस महान् आर्यजाति का उत्थान होगा या भयङ्कर पतन—मैं क्या लिखूँ, कलम काँपती है।

हजारों वर्षों के विनाश को सुनकर, पढ़कर देखकर आज भी हिन्दूजाति उसी विनाश के मार्ग पर जा रही है और दूसरे लाभ उठाकर राज्यगद्दी हथिया रहे हैं। चारों ओर आँखें खोलकर देखोगे तो यही दिखाई देगा। पहले हिन्दूजाति के क्षत्रिय राजे परस्पर लड़ते थे तो आज राजनैतिक दल बनाकर हिन्दू ही आपस में लड़ रहे हैं। सत्ताधारी काँग्रेस, पुरानी काँग्रेस, समाजवादी दल, प्रजा समाजवादी पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी, स्वतन्त्र पार्टी, कई कम्युनिस्ट पार्टी, क्रान्तिदल, द्रविड़संघ आदि पार्टियों के नेता निर्माता हिन्दू ही तो हैं जो दिनरात एक दूसरे की टाँग खींचकर हिन्दूजाति को हानि, राष्ट्र का सत्यानाश, भारतीय सभ्यता का सर्वनाश आये दिन कर रहे हैं और दूसरे विधर्मी लोग इन सब पार्टियों में घुसकर इन्हें पूरा-पूरा उल्लू बनाकर अपना लक्ष्य पूरा कर रहे हैं।

मैं हिन्दूजाति में जन्मे किसी भी नेता से पूछना चाहता हूँ कि जब आप आये दिन अपने भाषणों में पुराने हिन्दू राजाओं को परस्पर लड़ने पर उन्हें मूर्ख कहने और उनके कारण राष्ट्र को विदेशियों के कब्जे में जाने का दोष दिया करते हैं तब आज आप अपने आचरण पर विचार तो करें कि क्या आये दिन कुर्सी छीनने की खातिर नानाप्रकार के प्रपञ्च, विदेशियों से षड्यन्त्र, जनता को सिर फुटव्वल कराकर सम्पूर्ण राष्ट्र और आर्यजाति को विनाश के मार्ग पर नहीं ले जा रहे हैं ? क्या भावी हिन्दू सन्तान और भावी इतिहासकार

Scanned by CamScanner

आपको उसी प्रकार देशद्रोही, जातिद्रोही नहीं लिखेंगे जैसे आप हजारों वर्ष पुराने राजाओं को देशद्रोही और हिन्दू साम्राज्य को नष्ट करनेवाले कहते रहते हैं।

यह तो बिल्कुल सत्य है कि पहले कोई एक सर्वोच्च सत्ता नहीं थी। छोटे-छोटे राजा होते थे जो परस्पर लड़ते रहते थे। किन्तु आज जिसे सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न सत्ता समझा जाता है उसकी दशा क्या पहले युगों के राजाओं जैसी नहीं हो रही है। कभी नेताओं के कुचक्रों से सारी रेल व्यवस्था ठप्प, कभी सरकारी दफ्तरों में काम बन्द, कभी नगर बन्द, कभी बिजली, कभी पानी, कभी पुलिस निष्क्रिय, कभी डाक बन्द, कभी तार, कभी हस्पताल में हड़ताल और कभी सरकारी भण्डार भस्म। क्या इसीप्रकार से सर्वोच्च सत्ता शक्तिसम्पन्न हो सकती है। क्या आये दिन राज्यों के टुकड़े, राज्यों में भी जिलों के टुकड़े, जिलों में भी गाँव के टुकड़े, यहाँ तक ही नहीं मुझे पता है कि मोहल्लों के भी टुकड़े हुए हैं। क्या यह शक्तिसम्पन्न राष्ट्र के सुदिन के लक्षण हैं। बिल्कुल नहीं, हरगिज नहीं।

पुराना इतिहास साक्षी है—छोटे-छोटे राजा परस्पर तो लड़े, किन्तु प्रजा ने न हड़ताल की, न राजमहल फूँके। किन्तु आज यह सबकुछ हो रहा है—जिसका परिणाम घूम फिरकर हिन्दूजाति को ही भोगना पड़ रहा है और दूसरे बीच में घुसकर बड़े मजे ले रहे हैं। कोई इसे थपकी दे रहा है तो कोई इसे थपथपा रहा है। राष्ट्र के नेताओं की इस आपा-धापी से शासन कमजोर हो रहा है। राष्ट्र की पुलिस को आये दिन, हर समय इन नेताओं के आगे-पीछे फिरने से फुर्सत नहीं। फिर गुंडा-गर्दी, चोरी, डकेती, कत्ल, अपहरण, बलात्कार, छीना-झपटी, जेबकतरी आदि कुकर्मों से जनता को बचाने की पुलिस को कहाँ फुर्सत।

मैंने अनेक राज्य और राजा देखें हैं। मुझे याद है—उदयपुर के महाराणा की जो सायंकाल को घोड़ागाड़ी में बैठकर राजधानी की सड़कों पर घूमता था। पुलिस उसके आगे होती थी ना पीछे। ऐसा प्रतीत होता था कि इस महाराणा को अपनी प्रजा से कोई खतरा नहीं। किन्तु आज जब मन्त्रियों के आगे-पीछे, दायें-बायें पुलिस फिरती रहती है तो ऐसा लगता है कि जैसे इन्हें चारों ओर से खतरा ही खतरा हो। तो जहाँ के शासक को हर समय अपने जीवन का खतरा रहता हो वहाँ की प्रजा की सुरक्षा की तो बात ही क्या?

चुनाव

राष्ट्र में आये दिन चुनाव होते हैं, कभी राष्ट्रपति के, कभी संसद के, कभी राजसभा के, कभी राज्यों की विधानसभाओं के, कभी नगरपालिकाओं के, कभी ग्रामसभाओं के। इन चुनावों पर जहाँ सरकार का अरबों रुपया खर्च होता है वहाँ जनता का भी। फिर सिर फुटव्वल, खूनी लड़ाई, फूट और कलह भयङ्कर रूप धारण करती रहती है और इसमें भी नाश होता है—हिन्दू जाति का ही, क्योंकि यही तो बहुसंख्या में है। क्या देश का हिन्दू अपनी

Scanned by CamScanner

आँखों से यह सबकुछ विनाश होता हुआ देखता रहेगा।

डॉक्टर मनूची जो ४९ वर्ष तक शाहजहाँ और औरंगजेब की नौकरी में रहा था उसने अपने ग्रन्थ में एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात लिखी है—

"हिन्दुस्तान में चार ऐसे बड़े घराने हैं जो एकता कर लें तो मुगलिया सल्तनत एकदिन भी हिन्दुस्तान में नहीं रह सकती।"

इनमें उदयपुर का राणा ही ऐसा है जिसके पास १॥ लाख पैदल और ५० हजार घुड़सवार लड़ाकू राजपूत हैं जो युद्ध से मुँह मोड़ना ही नहीं जानते। इतनी ही लड़ाकू सेना जोधपुर में और जयपुर में है। इनसे कम बुन्देले हैं जो बड़े बहादुर हैं। हतभाग्य आर्यजाति तेरा। न तो तेरे पूर्वज जब मिलकर बैठे और न आज। आज के विधानशास्त्री तो विरोधी दल बनाना ही ठीक मानते हैं—सहयोगी दल नहीं। वाह रे विधानशास्त्रियों—तुम्हारे विरोधी दल की ईजाद।

ऐसी दशा देखकर ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हृदय विदारक शब्दों में कहा था—आपस की फूट से कौरवों-पाण्डवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अबतक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयङ्कर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा।..... परमेश्वर करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाये।

हिन्दू घट रहा है ?

आप सन् १८८१ की जनगणना से आज १९७१ तक की जनगणना के आँकड़ों को पढ़ जाईये हर १० वर्ष में हिन्दू घटा है। इसी १९७१ की जनगणना में अन्यों की अपेक्षा हिन्दू घाटे में रहा है। हिन्दू के घटने के वैसे तो अनेक स्रोत हैं, किन्तु गत १५ वर्षों से हिन्दू एक ऐसे चक्र में फँसता जा रहा है जिसके रहते हिन्दू, अनिवार्य रूप से किसी दिन अल्पमत में रह जायेगा। अल्पमत में होने से फिर गुलामी की चक्की पीसता फिरेगा, किन्हीं की कब्रें खोदता फिरेगा या दूसरे दर्जे के गुलामों की लिस्ट में लिखा जायेगा।

वह भयङ्कर चक्र है—परिवार नियोजन

परिवार नियोजन के भँवर में हिन्दू ही फँस रहा है और हिन्दुओं में भी पढ़ा-लिखा, समझदार, बुद्धिजीवी और फटाफट अंग्रेजी बोलनेवाला नेता फँस रहा है। इनमें प्रायः ऐसे हैं जो या तो सन्तानहीन हैं या हैं—तो एक या दो, तीन का बाप तो बिरला ही होगा। विशेष बात यह है कि राज की बागडोरें भी ऐसे ही महानुभावों के हाथों में हैं। भला हो महामहिम राष्ट्रपति श्री गिरी का जो आज ११ बच्चों के पिताजी हैं।

हाँ जो साधारण श्रेणी या बिल्कुल छोटी श्रेणी के हिन्दू हैं वे अभी तक परिवार नियोजन के चक्र में नहीं फँसे हैं। इन्हीं के कारण अभी तक हिन्दू बहुमत में हैं। इन्हीं के वोट हैं जिनसे भारत सरकार बनती रही है।

दूसरी ओर मुसलमान और ईसाई हैं। इनके तो मौलवियों ने और पादरियों ने परिवार नियोजन से तोबा की हुई है। वह जानते हैं कि हिन्दू को

Scanned by CamScanner

परिवार नियोजन में उलझने दो। इनकी तादाद घटने दो, हम इस उलझन में न फँसकर अपनी तादाद बढ़ावेंगे तभी तो हमारा राज्य होगा, क्योंकि वोटों पर ही तो राज्य बनता है, अत: हिन्दू की वोट कम हो और हमारी बढ़ें। यही प्रयत्न जारी रहे।

मैं एक रिक्शा में जा रहा था। चालक से पूछ बैठा—बेटा कितने बच्चों के बाप हो ? उसने हँसकर कहा—अल्लाह ने सात दिये हैं। मैंने कहा अभी तो तुम युवक हो—आगे और भी बच्चे होंगे तब एक रिक्शा से बच्चों का कैसे गुजारा करोगे। वह बोला—मैं गुजारा करनेवाला कौन होता हूँ—मेरी क्या औकात है। अल्लाह ने औलाद दी है, अल्लाह ही गुजारे के लिए देगा, और नहीं देगा तो अल्लाह की मर्जी। उसकी बातें सुनकर मेरा सिर चक्कर खाने लगा, रह-रहकर विचार घूमने लगा कि इस प्रजातन्त्र के युग में इन्हीं का राज होगा, न शिक्षित का, न बहादुर का, न नेता का और न आर्य—हिन्दू का।

आश्चर्य तो यह है कि एक विधर्मी रिक्शावाला, तो यह जानता है कि वोटों से राज्य बनते हैं, अत: वोट बढ़ाने के लिए अधिक-से-अधिक सन्तान पैदा करनी, एक बीबी से, दो बीबी से, तीन और चार बीबी से जितने भी बच्चे हो सकें पैदा करेंगे तो दीन की खिदमत होगी, रोजी-रोटी तो अल्लाह देगा ही। तर नहीं तो सूखी ही सही। वह यह भी सोचता है कि अपने यहाँ बीबी न मिल सके तो दीन के लिए जैसे हो दूसरों की छीनो।

किन्तु पढ़ा-लिखा हिन्दू कुछ नहीं सोचता वह तो सन्तान के झंझट से छुट्टी पाना और मौजबहार उड़ाने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझता है।

मैं तो इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम नम्बर पर चीन है और दूसरे नम्बर पर भारत और भारत में भी बहुसंख्या में हिन्दू है। इन हिन्दुओं की संख्या बढ़ न जाय, भारत, चीन से जनसंख्या में बराबर या अधिक न हो जाय इस चिन्ता से संसार के अनेक राष्ट्रों ने हमारी सरकार को भारी अनुदान देकर परिवार नियोजन के मार्ग पर चलाया है जिससे भारत की हिन्दू जनसंख्या भारत में कम हो सके। अभागा हिन्दू ही इन विदेशी शिकारियों के जाल में फँस गया है जो हिन्दूजाति के लिए भयङ्कर खतरा सिद्ध होगा। तब हिन्दू का क्या बनेगा जरा गम्भीरता से बुद्धिमान हिन्दू बन्धु विचार तो करें।

आज आये दिन हमारी सरकार की ओर से बड़े-बड़े विज्ञापन अखबारों में भरे होते हैं, जगह-जगह प्रदर्शनी दिखाई जाती है, परिवार नियोजन कैम्प लगाये जाते हैं। हजारों डॉक्टर और डॉक्टरनी देवियों और पुरुषों को सन्तानहीन करने पर लगाये हुए हैं। अरबों रुपया इसपर बहाया गया है। गाँव-गाँव में परिवार नियोजन की प्रचारिकायें घूम रही हैं। देवियों को लूप और पुरुषों की नसबन्दी कराने के लिए इनाम दिया जाता है। इस काम के एजेन्ट नर-नारियों को भी इनाम दिया जाता है। मानो सम्पूर्ण सरकारी मशीनरी इसी कार्य पर लग रही हो। और यह सब हो रहा है—मेरी हिन्दूजाति के लिए, मेरे बुद्धिजीवी वर्ग के लिए। मुसलमान और ईसाई तो न नसबन्दी कराते हैं और न लूप को

Scanned by CamScanner

सूँघते ही हैं।

परिवार नियोजन के प्रचारक आये दिन नए-नए भाषण, युक्तियाँ और सब्जबाग दिखाते हैं। अधिक सन्तान पैदा होने का बड़ा घिनौना दृश्य दिखाते हैं। वे ऐसा भी नहीं कहते कि इसमें हिन्दू ही फँसे और कोई नहीं।

किन्तु मैं बड़े ही विनम्र शब्दों में सरकार से जानना चाहता हूँ कि जब वोटों के आधार पर ही सरकार बनती है। तब देखना होगा कि जब एक जाति वोट बढ़ाने के लिए परिवार नियोजन से परहेज करती है। येन-केन अपनी वोट वृद्धि में लगी है तब दूसरी जाति को ही परिवार नियोजन में फँसाकर क्यों घटाएँ। यदि सरकार भी यही चाहती हो कि हिन्दू बहुमत में हैं—इन्हें कम करना चाहिए तब ऐसी दशा में मेरे लिए अरण्यरोदन के सिवाय और चारा ही क्या रहता है।

हाँ यहाँ पर मैं दी जा रही एक युक्ति का बलपूर्वक खण्डन भी करना चाहता हूँ और वह यह है कि दो या तीन सन्तान उत्तम, श्रेष्ठ विद्वान् और बलवान् होंगी। अधिक सन्तान तो कूड़ा-करकट और राष्ट्र पर बोझ ही होगा।

इस युक्ति पर मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि राष्ट्र के वोट की लिस्ट में विद्वान्, बलवान् और कूड़ा-करकट सबका एक ही स्थान है। वोट की लिस्ट में विदुषी और वेश्या का एक ही दर्जा है। वोटर का कोई मापदण्ड नहीं है।

मैं जानना चाहता हूँ कि इसकी क्या कसौटी है कि पहली दो या तीन सन्तान श्रेष्ठ होंगी और आगे की निकम्मी। मैं जानता हूँ कि भारत का महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर अपने पिता का नवाँ बेटा था जिसने सारे विश्व में ख्याति प्राप्त की थी लेकिन इनसे पहली सन्तानों को कोई भी नहीं जानता। यूरोप का महाकवि मिलटन अपने पिता का ग्यारहवाँ बेटा था क्या कोई जानता है—उसके बड़े भाईयों को? इसप्रकार मेरे पास भारत के राष्ट्रीय नेताओं की ऐसी सैकड़ों की सूची है।

एक बात मैं हिसाब की बताना चाहता हूँ। वह यह है कि दो या तीन पैदा करने में औसतन एक मर जाता है। शेष दो में एक पुत्री और एक पुत्र, इस हिसाब से आप आनेवाले २५ वर्ष का हिसाब देखें कि कितने जवान तीनों सेनाओं के लिए, पुलिस के लिए, कितने सरकार को चलाने के लिए, कितने डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, व्यापारी, उद्योगपति, कृषक, मजदूर तथा अन्यान्य कार्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पैदा हुए होंगे। मेरा हिसाब है कि हम संख्या में दिवालिए ही रहेंगे। अतः आज इस दो या तीन के नारे की आवश्यकता नहीं है आज तो हमें जनसंख्या में चीन से भी आगे बढ़ना चाहिए तभी हम हिन्दू और हमारा राष्ट्र सुरक्षित रहेगा अन्यथा नहीं। ऐसी दशा में हमारा नारा होना चाहिए—पहला बच्चा अभी-अभी, दस के बाद कभी-कभी। मेरी बात पर मेरे बहुत से बन्धु नाक-भौं सिकोड़कर कहेंगे कि इतनी सन्तान क्या खावेगी, कहाँ रहेगी, लिखते समय यह तो

Scanned by CamScanner

सोचना चाहिये था।

मैं अपने विचारक बन्धुओं से विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि भारत जैसे विशाल देश में खाने के साधनों की कमी नहीं है। केवल व्यवस्था की कमी है।

१. लाखों एकड़ भूमि में ''जौ'' पैदा किया जा रहा है—शराब बनाने के लिए। यह बन्द किया जाय। इस भूमि में खाने के लिए अन्न पैदा किया जाय।

२. लाखों एकड़ में जिसमें बढ़िया गेहूँ पैदा किया जा सकता था उसमें तम्बाकू पैदा किया जा रहा है—केवल सिगरेट के कारखानों के लिए। मेरे विचार में यह भी बन्द होना चाहिए। केवल खाने का अन्न ही पैदा होना चाहिए।

३. करोड़ों एकड़ भूमि में गन्ना पैदा किया जा रहा है—देश और विदेशों में चीनी भेजने के लिए। विदेश में चीनी भेजने का मोह छोड़कर स्वदेश की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही गन्ना उत्पन्न करना चाहिए। शेष भूमि में अन्न।

४. अब तो भारतभर में हजारों एकड़ भूमि में बढ़िया शराब के लिए अंगूर पैदा किए जा रहे हैं। यह भी बन्द होना चाहिए।

५. जो भूमि अन्न उत्पन्न करती थी उसपर अनावश्यक रूप में दिन-रात बड़ी-बड़ी विशाल कोठियाँ, आरामगाह, सैर-सपाटे और मनोरंजन के क्लब बन रहे हैं, इनपर अंकुश लगाकर भूमि को अन्न के लिए बचानी चाहिए।

६. नेताओं की नारेबाजी के कारण अन्न उगलनेवाली भूमि का भारी मात्रा में संहार हो रहा है। मैं ऐसे स्थान जानता हूँ जहाँ की जनसंख्या ३० हजार है और वहाँ दो डिग्री कॉलेज, इन दोनों में कुल २०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। एक-एक कॉलेज ने सैंकड़ों एकड़ भूमि घेरी हुई है। सत्य बात तो यह है कि वहाँ एक कॉलेज की भी आवश्यकता नहीं थी। धन बरबाद और भूमि बरबाद। पर नेताओं का तो रंग राग ही निराला है। भूमि की बचाने की बातें तो आप जिधर देखेंगे उधर ही मिलेगी। मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि भारत की उपजाऊ भूमि में अन्न उपजाने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

नारी अपहरण, बलात्कार और व्यभिचार

नारियों के कारण परस्पर युद्धों से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। विदेशी शासकों ने भी नारियों के लिए हिन्दुओं से सैकड़ों युद्ध लड़े हैं। इन युद्धों के कारण अनेक ललनाओं ने विष खाकर आत्महत्या की, अनेकों ने धधकती अग्नि में कूद कर आततायी के मुँह पर चपत मारी। किसी-किसी ललना ने स्वधर्म और स्वराज्य की रक्षा के लिए तलवारों से शत्रुओं के मुँह दल दिये। अन्तिम घटना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की है जिसने अंग्रेजी फौजों का मुकाबला बड़ी बहादुरी से करते हुए वीरगति प्राप्त की। उस नारीजाति की दुर्दशा पर, आज हो रहे अत्याचार बलात्कार और अपहरण पर मैं क्या लिखूँ।

Scanned by CamScanner

केवल एक पत्र जो महात्मा गाँधी ने अपने हरिजन सेवक दि० ५-५-४६ में प्रकाशित किया था—आपकी जानकारी के लिए यहाँ दे रहा हूँ। इससे राष्ट्र में राष्ट्रीय नेताओं द्वारा किए कुकर्मों की एक झलक मिलती है। महात्माजी ने पत्र का शीर्षक दिया है—**सफेद पोशों पर आरोप**

पूरा पत्र इस प्रकार है—

''मैं स्त्री हूँ, पर....विषय में आपको लिखना उचित समझती हूँ। लगभग तीन मास हुए...का नौकर...में...के पास ठहरा था। कांग्रेसी लोगों के बारे में मेरे विचार बड़े पवित्र थे, इसलिए...के सम्पर्क में मैं आ गई। मैं रोज चरखा कातती थी। वह दुष्ट भी रोज आया करता था और मुझे बेटी कहकर पुकारता था। मैं उसको चाचा जी कहा करती थी। एक दिन शाम को एक मोटरकार आई। दुष्ट...ने मुझे कहा—'बेटी, कभी मोटरकार में भी बैठी हो! अगर नहीं बैठी हो तो आओ, आज तुमको बैठाकर सैर करा लावें।' मुझे उसपर किसी प्रकार का सन्देह न हुआ और मैं उसके साथ मोटरकार में बैठ गई। कार में मुझे सीधा...लाया गया। और मेरे मुँह में कपड़ा ठूँस दिया गया, जिससे मैं बोल न सकूँ। उसके बाद में.....लाई गई और मेरे धर्म को बिगाड़ने का कुछ दिन तक प्रयत्न किया गया। कई बार भागना चाहा पर भाग न सकी। पिस्तौल का डर दिखाया जाता था और मैं डर जाया करती थी। जान का मोह हरएक को होता है। एक सेठ...हैं, जोकि...के बड़े धनी सेठ हैं और सुना है कांग्रेस के बड़े नेता हैं। एक दिन वे मेरे पास आये। उन्होंने कहा—'मेरे साथ...चली चलो, हम दोनों बड़े मजे उड़ायेंगे। दुष्ट...मेरी ओर देखकर हँस रहा था। सच कहती हूँ महात्माजी जैसा बर्ताव इस चाण्डाल सेठ ने मेरे साथ किया वह वर्णन के बाहर है, और भी बहुत-से लोग हैं जिनके नाम मैं नहीं जानती पर इस सेठ ने उस बुढ़िया को ५०० रुपये दिये थे। बुढ़िया ने मुझको बतलाया कि यह बड़ा धनी सेठ है, इसके साथ चली जा, मजे में रहेगी। एक दिन शाम को...की सहायता से मुझे इस नरककुण्ड से निकाल लिया गया।'' इस खत पर महात्माजी लिखते हैं—

मुझे ऐसे काफी खत मिले हैं। उनमें कांग्रेस के नामी लोगों पर व्यभिचार का आरोप है। सब बात बनावटी हैं, ऐसा मानकर बैठे रहना उचित नहीं लगता। यह किसी ने कभी दावा नहीं किया है कि सब कांग्रेसी अच्छे हैं। यह अभिमान की बात है कि कांग्रेस में कुछ भी ऐब नहीं होना चाहिए, ऐसी मान्यता रहती है। व्यभिचारादि हर किस्म के लोगों में चलता है। मेरा कर्त्तव्य इतना है कि अगर वह इल्जाम किसी पर भी लागू होता है, तो उसे दुरुस्त किया जाए। व्यभिचार करने में भी कुछ मर्यादा तो रहती है। अगर मुझे लिखनेवालों ने सब झूठी बातें नहीं लिखी हैं, तो यहाँ निर्दोष लड़कियों को फुसलाने तक बात चली गई है।

नई दिल्ली २८-४-४६

हरिजन सेवक ५-५-४६

इस पत्र की घटना उस समय की है जब देश गुलाम था और राष्ट्र के नेता गुलामी की जंजीर तोड़ने के लिए जूझ रहे थे, तब राष्ट्रीय कहलानेवाले

Scanned by CamScanner

लोगों का ऐसा चरित्र था। आज तो स्वतन्त्र हैं, सभी प्रकार से साधन सम्पन्न हैं, मौज-बहार और गुलछर्रे उड़ाने तथा इसप्रकार के घृणित अत्याचार करने के पश्चात् किसी अबला की आह सुननेवाला आज कोई महात्मा गाँधी भी नहीं है तब अबला नारियों पर क्या गुजरती होगी—वही जाने। इतना तो मैं कह सकता हूँ कि जैसा अत्याचार आज नारियों पर किया जा रहा है ऐसा अत्याचार तो सीता पर रावण ने भी नहीं किया था जिसका पुतला हर साल जलाया जाता है।

यद्यपि इस पत्र में पात्रों के नाम-गाम के स्थान में बिन्दियाँ लगा दी हैं, किन्तु इस घटना का पूरा ज्ञान है—आर्यनेता लाला श्रीरामगोपालजी शालवाले को। उन्होंने ही उस बिलखती, तड़फती और अत्याचार पीड़ित ललना को महात्माजी के सामने उपस्थित किया था। लाला रामगोपालजी चाहते थे कि इस केस को पुलिस में दे दिया जाए, किन्तु महात्माजी के आश्वासन पर कि मैं उन लोगों की खबर लूँगा—पुलिस में जाने का विचार छोड़ दिया। बाद में क्या हुआ; उन आततायियों की खबर ली या उन्हें खबर देकर छोड़ दिया यह इस पूरे पत्र और उसपर महात्माजी की भेदभरी टिप्पणी कुछ बता सकेगी।

यह घटना स्वराज्य से १५ मास पहले की है। स्वराज्य के बाद ऐसी घटनाएँ कितनी घटी होंगी इसकी जाँच तो कोई जाँच कमीशन ही कर सकता है।

दूसरी प्रकार आज ऐसे भी विवाह बड़े समारोह से किए जा रहे हैं जो धर्मनिरपेक्ष कहलाते हैं इन्हें देश के नेताओं का आशीर्वाद और उपहार प्राप्त होता रहता है। यह भी कहा जाता है कि ऐसे विवाहों में क्या हानि है जिनमें हिन्दू स्त्री कृष्ण की पूजा करती और मुसलमान नमाज अदा करता है। इसके लिए अनेक हिन्दू देवियों के अदाहरण दिए जाते हैं जैसे—श्रीमती खान, श्रीमती असगर, श्रीमती अली, श्रीमती आसफअली इत्यादि। किन्तु आज तक कोई यह नहीं बता सका कि इनसे हुई सन्तानें हिन्दू बनेंगी या मुसलमान। कोई ऐसा उदाहरण भी नहीं है कि किसी हिन्दू देवी ने अपने बच्चों को हिन्दू रहने दिया हो। यह भी एक भयङ्कर मार्ग है हिन्दू नारियों द्वारा हिन्दूजाति को मृत्यु के मुँह में धकेलने का।

जब भारत के राष्ट्रपति डॉ० जाकिरहुसैन थे तब उनके परिवार की किसी बेटी ने एक ब्राह्मण युवक से विवाह करना चाहा, इसपर डॉ० महोदय से आज्ञा माँगी, उनकी आज्ञा क्या थी—फतवा था, इसके अनुसार उस युवक ने इस्लाम स्वीकार कर लेना ठीक समझा। दूसरी घटना है—भारत के महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर की पौत्री का मुसलमानी बनकर नवाब पटौदी से विवाह। इसपर देश के अनेक नेताओं द्वारा बधाई दी गयी। किन्तु पता नहीं हिन्दूजाति को साँप सूँघ गया या लकवा मार गया, जो इसप्रकार के हिन्दूजाति के विनाश के कारणों को सहती है। चाकू और खरबूजे की कहावत यही तो है।

यह सत्य है कि भूतकाल में नारियों पर ऐसे घिनौने अत्याचार कभी

Scanned by CamScanner

नहीं हुए जितने आज हो रहे हैं। भगवान् मनु के शब्दों में नारी पूज्या थी, किन्तु अब पूज्या नहीं रही, अब तो नाचनेवाली, कामवासना की पूर्ति करनेवाली, सिनेमा में शृङ्गार करके चुम्बन कराते हुए दर्शकों को मोहित करनेवाली तथा राष्ट्र के बड़े-बड़े समाचार-पत्रों में इनके नग्न चित्रों द्वारा सजाये जाने की सामग्री मात्र है। और अब तो इन्हें व्यभिचार करने, फिर गर्भ गिराने की खुली छूट दे दी गई है। आज बड़े-बड़े नगरों के चौराहों पर अर्द्धनग्न, कामुकता और चुम्बन करते हुए बड़े-बड़े घिनौने रंगीले पोस्टर लटके हुए देखे जाते हैं।

आज तो ऐसा लगता है जैसे विधाता ने नारी को नाचनेवाली पुतली बनाया हो, किन्तु मेरा मत है कि विधाता ने नारी को नाचनेवाली नहीं—महापुरुषों को उत्पन्न करनेवाली, सतीत्व की वेदी पर बलिदान होनेवाली, गृहस्थ का उच्चादर्श उपस्थित करनेवाली तथा समय पड़ने पर तलवार पकड़कर दुष्टदलन करनेवाली बनाया है। आज कोई ऐसा कन्या शिक्षणालय नजर नहीं आता जहाँ के उत्सवों पर देवियों को शृङ्गार कराकर पैरों में घुँघरु बाँधकर नचाया न जाता हो और मेरे जैसे बेशर्म बुड्ढे दर्शक बनकर मुस्कराते न रहते हों। इसे मैं नारीजाति का सम्मान कहूँ या अपमान, नारी का आदर कहूँ या अनादर। नारी को उच्चासनपर बैठनेवाली कहूँ या नाच दिखाकर मजलिस की शोभा बढ़ानेवाली।

मुझे अब तक यही पता था कि हिजड़े नाचते हैं या वेश्या, किन्तु मेरी आर्यजाति की अबोध कन्याओं को नाचना सिखाया जाता है। यह है दशा—उस नारीज़ाति की, जो महापुरुषों की जननी, जो महावीरों की पत्नी और महादेवों की पुत्री हैं। ऐसी देवियों की भी कमी नहीं है जिन्हें लोभ से, लालच से डराकर, धमकाकर, फुसलाकर नराधम लोग अपने फौलादी पञ्जों में जकड़कर हिन्दूजाति को नष्ट करने में लगे हुए हैं। मैं चूँकि हिन्दू हूँ इसलिए हिन्दू नारियों पर हो रहे अत्याचारों पर आँसू बहा रहा हूँ, किन्तु यदि ऐसे अत्याचार किसी विधर्मी नारी पर भी होते सुनूँगा तो मेरे आँसू की धार बन्द नहीं होगी। नारी पर अत्याचार करना और अत्याचार सहना भयङ्कर अपराध है। नारी—नारी है, अपनी हो या पराई, स्वधर्मी हो या विधर्मी, नारी का आदर, सम्मान और रक्षा करने में ही मैं मनुष्यता मानता हूँ अन्यथा ऐसे मनुष्य तो पशु से भी गये बीते हैं।

आज कहा जाता है कि पुरातन काल के धर्माचार्य नारी निन्दक थे। मैं ऐसे लोगों को हठधर्मी, द्वेषभाव से पूरित और विशाल आर्यजाति को बदनाम करने में अपनी शान समझनेवाले मानता हूँ। यहाँ पर मैं भारत के चार महापुरुष—महर्षि दयानन्द, महात्मा गाँधी, स्वामी श्रद्धानन्द और राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के विचार प्रस्तुत करता हूँ। सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

"जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रिया निष्फल हो

Scanned by CamScanner

जाती हैं।'' ...ऐश्वर्य की कामना करनेहारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समय में भूषण, वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें।

—जिस घर में, कुल में, स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। —जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता में भरी रहती हैं वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

महर्षि दयानन्द के इन शब्दों पर भी राष्ट्र को ध्यान देना चाहिए जो महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में लिखे हैं—

''जो स्त्री अपनी जाति गुण के घमण्ड से पति को छोड़ व्यभिचार करे उसको बहुत स्त्री और पुरुषों के सामने जीती हुई कुत्तों से राजा कटवाकर मरवा डाले। उसी प्रकार अपनी स्त्री को छोड़ के पर स्त्री वा वेश्यागमन करे उस पापीजन को लोहे के पलंग को अग्नि से तपा के लाल कर उसपर सुला के जीते को बहुत पुरुषों के सन्मुख भस्म कर देवें।''

यदि आज के राष्ट्रनेता महर्षि के उक्त आदेश पर आचरण करें तो फिर राष्ट्र में न व्यभिचारी रहेगा न व्यभिचारिणी।

महात्मा गाँधी हिन्दी-नवजीवन दि० ८ अगस्त १९२९ के अंक में लिखते हैं—

''हिन्दू सभ्यता में तो स्त्री का इतना सम्मान किया गया है कि प्राचीन काल में स्त्री का नाम प्रथम पद रखता था। उदाहरणार्थ हम 'सीताराम' कहते हैं, 'राम सीता' कदापि नहीं। विष्णु का 'लक्ष्मीपति' नाम प्रसिद्ध है ही। महादेव को हम पार्वती-पति के नाम से भी पूजते हैं। महाभारत ने द्रोपदी को और आदिकवि वाल्मीकि ने सीताजी को गौरव का स्थान दिया ही है। हम प्रातःकाल सतियों का नाम लेकर पवित्र होते हैं। जो सभ्यता इतनी उच्च है, उसमें स्त्रियों का दर्जा पशु या मिल्कियत के समान कदापि हो नहीं सकता। पत्नी की रक्षा करना और अपनी हैसियत के मुताबिक उसके भरण-पोषण और वस्त्रादि का प्रबन्ध करना पति का आवश्यक धर्म है।'' नवजीवन के १०-१०-२९ में महात्मा गाँधीजी फिर लिखते हैं—

''राम का यश सीताजी पर निर्भर है। सीताजी का रामजी पर नहीं। कौशल्या, सुमित्रा आदि भी मानस के पूजनीय पात्र हैं। शबरी और अहल्या की भक्ति आज भी सराहनीय है। रावण राक्षस था, मगर मन्दोदरी सती थी। ऐसे अनेक दृष्टान्त इस पवित्र भण्डार में से मिल सकते हैं। मेरे विचार में इन सब दृष्टान्तों से यही सिद्ध होता है कि तुलसीदासजी ज्ञानपूर्वक स्त्री-जाति के निन्दक नहीं थे। ज्ञानपूर्वक तो वह स्त्री-जाति के पुजारी ही थे।''

स्वामी श्रद्धानन्दजी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कल्याण-मार्ग का पथिक' में लिखते हैं—''वैदिक आदर्श से गिरकर भी जो सतीत्वधर्म का पालन पौराणिक समय में आर्य महिलाओं ने किया है, उसीके प्रताप से भारत भूमि रसातल को नहीं पहुँची और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति अब तक विद्यमान है। यह

Scanned by CamScanner

मेरा निज का अनुभव है। भारत माता का ही नहीं, उसके द्वारा तहजीब की ठेकेदार संसार की सब जातियों का सच्चा उद्धार भी उसी समय होगा जब आर्यावर्त्त की पुरानी संस्कृति जागने पर देवियों को उनके उच्चासन पर फिर से बैठाया जाएगा।''

राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादजी ने २९ सितम्बर १९५२ को दीक्षान्त भाषण में कहा था—प्राचीनकाल में हमारे देश में स्त्रियों का कितना महत्त्वपूर्ण व उत्कृष्ट स्थान रहा है और प्राचीन भारत की स्त्रियों ने बड़ी निपुणता तथा चतुरता के साथ बुद्धि और त्याग के बल पर गृह एवं अनेकानेक सामाजिक कार्यों में किसप्रकार भाग लिया और किसप्रकार वे समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक रहीं। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे गणित-शास्त्र, नीति-शास्त्र, धर्म-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, गृहस्थ-शास्त्र आदि सभी विषयों में पारङ्गत थीं। सीता, सावित्री, गार्गी, लीलावती आदि स्त्री रत्नों के नाम लेते हुए आज भी हमारा मस्तक गर्व से ऊँचा हो उठता है। हमारे यहाँ की स्त्री-जाति का चरित्र प्राचीनकाल से उन्नत और उनकी परम्परा उज्ज्वल थी। उनके चरित्र आज भी नारीजाति के सन्मुख ज्वलन्त उदाहरणस्वरूप उपस्थित किए जा सकते हैं। (भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण पृष्ठ २१६)

नारीजाति के सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई पर सारे देश के नर-नारियों में तुलसीदास पर भारी क्रोध है और तुलसीदास के साथ समूची आर्यजाति को नारी निन्दक कहा जाता है। कृपया शान्त मस्तिष्क से गोस्वामीजी की चौपाई पर ध्यान देने का कष्ट करें और इस बारे में मेरे विचार पर भी ध्यान देंगे तो तुलसीदास का ही नहीं सारी आर्यजाति का कलङ्क दूर होगा। तुलसीदास की चौपाई आज ऐसे छपी हुई है—

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥

यदि यह ठीक है तो नारी निन्दा है, किन्तु मेरे विचार में चौपाई का पहला और अन्तिम शब्द गलत है। मैंने ६० वर्ष पूर्व किसी रामायण में इस प्रकार पाठ पढ़ा था—

ढोर गंवार शूद्र पशुनारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥

यदि यह ठीक है तो इसमें नारी निन्दा नहीं है। कृपया विचार करें।

१. चौपाई में—ढोल शब्द जड़ है शेष चेतन है। चेतन को तो ताड़न से कष्ट होता है, किन्तु जड़ (ढोल) को आप ताड़िए ही नहीं—तोड़ भी दीजिए तब भी उसे कोई कष्ट अनुभव नहीं होगा।

२. अतः ढोल के स्थान पर ढोर ही होना चाहिए, क्योंकि ढोर को ही ताड़न से कष्ट होता है, ढोल को नहीं। अन्तिम पद में, नारी नहीं—पशुनारी है, अर्थात् जिसकी पशु जैसी बुद्धि हो वह तो ताड़न की अधिकारी है ही। फिर चाहे वो नर हो या नारी। आशा है मेरे विचार को युक्ति की कसौटी पर कसकर देखेंगे तो आप नारी निन्दा का दोष गोस्वामीजी के मत्थे पर मंढने

Scanned by CamScanner

और आर्यजाति को बदनाम होने से बचायेंगे। **सिद्धान्त के वाद-विवाद में न पड़कर**—मेरे विचार में आर्यजाति ने नारीजाति को जितना उच्च स्थान दिया है किसी दूसरी जाति ने नहीं।

आज भारत के पहाड़ों को देखें उनकी शिखा पर किसी-न-किसी देवी का मन्दिर बना मिलेगा। भारतभर के ग्राम-ग्राम में देखें—किसी-न-किसी माता का मन्दिर और सतियों के स्थान मिलेंगे।

भारतभर में स्वतन्त्रता की लड़ाई ''भारतमाता'' की जय के नारों से लड़ी जाती थी। काँग्रेस के किसी भी छोटे बड़े सम्मेलन को ''वन्दे मातरम्'' के साथ प्रारम्भ किया जाता था और ''भारत माता की जय'' के साथ समाप्ति होती थी।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद ''वन्दे मातरम्'' का स्थान ''जन गण मन नायक'' ने ले लिया और भारत माता की जय का स्थान जयहिन्द ने ले लिया। ऐसा क्यों हुआ यह तो राष्ट्रीय नेता ही जानें। मेरे अनुमान से तो यह परिवर्तन किसी सम्प्रदाय विशेष की तुष्टि के लिए किया गया है। जैसा भी हो। यह भी सत्य है कि भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जहाँ मातृशक्ति का आदर भारत माता की जय बोलकर किया जाता है और कहीं ऐसा नहीं सुना जहाँ मातृशक्ति की ऐसी पूजा हो। मैंने तो आजतक सुना नहीं कि अन्य राष्ट्र भी यथा पाकिस्तान माता की जय हो, चीन माता की जय हो, रूस माता की जय हो, अमरीका माता की जय हो, इङ्गलैण्ड माता की जय हो, का नारा लगाकर राष्ट्र को मातृशक्ति का सम्मान प्रदान करते हों।

फिर ध्यान दीजिए कि विधर्मियों द्वारा किसी भी प्रकार नारी अपहरण से आर्यजाति अनेक खतरों में पड़ती रही है, पड़ सकती है और पड़ेगी। अतः जैसे भी हो नारी अपहरण की रोकथाम की जाय। स्वधर्मी हो या विधर्मी वह नारीजाति की ओर कुदृष्टि न कर सकें, कोई भगा न सकें, फुसला न सकें, अपहरण, बलात्कार, व्यभिचार और अत्याचार न कर सकें। नारी पीड़ित होकर चीत्कार न सके इसका कठोरता से राज्य को प्रबन्ध करना चाहिए।

सरकारी नौकरी करनेवाली अथवा कॉलेजों में पढ़नेवाली नारियाँ भी आज नराधमों से सुरक्षित नहीं हैं। यदि यह ठीक है तो राज्य कठोरता से इनकी रक्षा करें। यदि राज्य रक्षा करने में असमर्थ हो तो माता-पिता को चाहिए कि अपनी बहू-बेटियों को नौकरी और कॉलेज की पढ़ाई से छुट्टी दिला लें। एक नारी का विधर्मियों में जाने का परिणाम वैसा ही है जैसा चक्रवृद्धि ब्याज या व्यवसाय का—

कहते हैं कि किसी बुढ़िया ने एक परचूनिये से पूछा कि बेटा कितनी कमाई कर लेता है। दुकानदार बोला कि ६ मास में दुगने हो जाते हैं। इस पर बुढ़िया ने उसे दो पैसे दुकान में जमा करने को दिये। फिर वह १२ वर्ष बाद आई और दुकानदार से अपने दो पैसे के हिसाब की माँग की। हिसाब किया गया तो पता लगा कि दो पैसे से १२ वर्ष में ५२४२८८ रुपये हो गए। यह

Scanned by CamScanner

पढ़कर आप चौंके नहीं, हैरान न हों—हिसाब करके देख लें।

यदि यह ठीक है तो इसी प्रकार एक-एक हिन्दूजाति की बेटी के घटने से हिन्दूजाति इसी हिसाब से घटती रहेगी और विधर्मी इसी हिसाब से बढ़ते रहेंगे।

गौरक्षा की समस्या

आज से १०० वर्ष पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गौरक्षा की ओर देशवासियों की आँखें खोलने के लिए "गौकरुणानिधि" पुस्तक प्रकाशित कराई।

महर्षि के निर्वाण के पश्चात् आर्यसमाज ने जगह-जगह गौरक्षा के लिए गौशालायें स्थापित कराईं, गौरक्षा के लिए आन्दोलन किए, भारी बलिदान दिए, किन्तु अंग्रेज के समय में काश्मीर जैसे अनेक हिन्दू राज्यों को छोड़कर कहीं भी गौवध नहीं रुका। काँग्रेस के नेताओं ने विश्वास से कहा था कि अंग्रेज के जाने पर बिना कहे-सुने स्वराज्य की प्रथम रात्रि में ही गौरक्षा की घोषणा हो जावेगी।

किन्तु विश्वास के विपरीत हुआ। हिन्दू राज्य समाप्त हुए। उनके साथ ही गौवध बन्दी भी बन्द हुई। २७ वर्षों की स्वतन्त्रता में गोवंश की रक्षा के लिए भारी आन्दोलन, सत्याग्रह, जेल, भूख हड़ताल, फिर गोली, अश्रुगैस और लाठी प्रहार और पता नहीं कितने गौभक्त मौत के मुँह से चले गए। सन् १९६६ से अब तक कई दर्जन गौ भक्तों पर दिल्ली के न्यायालय में केस चल रहे हैं—ईश्वर ही जाने कब तक यह केस चलते रहेंगे। इतना सब कुछ होने पर भी गौवंश का दिन पर दिन ह्रास होता जा रहा है। इसे मैं विश्वास कहूँ या विश्वासघात!

मेरे विचार में तो यदि सरकार गौवंश के वध पर रोक भी लगा दे तो भी **अब गौवंश जीवित नहीं रहेगा—ऐसा मेरा अनुमान है।** यदि जीवित रहा भी तो उतना ही रहेगा जितना हाथी? आश्चर्य की बात नहीं है—तथ्य है।

३०० वर्ष पहले मुसलिम काल में अकेली दिल्ली में ९०० हाथी थे आज एक भी नहीं। इसीप्रकार सारे राष्ट्र के विभिन्न राज्यों में हाथियों की पलटनें थी, किन्तु आज दर्शनों के लिए भी दुर्लभ। गौवंश की रक्षा और वृद्धि पर यदि सरकार और धनी जनता ने ऐसी ही उपेक्षा की तो निश्चय समझिये कि गोपाष्टमी की पूजा के लिए गौमाता के दर्शन वैसे ही दुर्लभ होंगे जैसे आज दशहरे के दिन नीलकण्ठ के।

यह बात मैं भावावेश में नहीं लिख रहा हूँ, वास्तविक तथ्य का निरूपण कर रहा हूँ। कृपया मेरे विचारों पर ध्यान दें—

१—गौ का पालन जमींदार और कृषक करता था। बैलों की जोड़ी और खाद के लिए। दूध के लिए तो वह भैंस पालता था।

२—बैल खेती के लिए, रथों में सवारियों के लिए, मण्डियों में अन्न और मीलों में गन्ना ढोने के लिए आवश्यक थे।

Scanned by CamScanner

३—अब खेती के लिए बैलों के स्थान में ट्रैक्टर, मण्डियों में अन्न और मीलों में गन्ना ढोने के लिए भैंसागाड़ी तथा छोटी-छोटी बारातें ढोने का काम भी भैंसे ठेले से ही लिया जाता है। ऐसी दशा में गौमाता के "जाये" बैल बेकार।

४—और अब तो दूध के लिए भी कोई नया आविष्कार हुआ है, पता नहीं वह बोतल में सफेद-सफेद किसका दूध है ? हाँ दिल्ली में सभी दुग्ध विक्रेताओं की दुकान पर आप बोर्ड लगे देखेंगे कि यहाँ पर "गाय का दूध बिकता है।" यदि यह बोर्ड ठीक है तो दिल्ली में लाखों गऊएँ होनी चाहिए, किन्तु.....।

आर्य (हिन्दू) होने के नाते गौवंश की रक्षा और वृद्धि चाहता हूँ और वह भी गौ के प्रति भक्ति के कारण नहीं अपितु गौ के पवित्र दुग्ध के लिए, उसके बच्चों को उसी पुराने काम में लगाने के लिए, गौवंश के गोबर की खाद से उत्पन्न निरोगी अन्न, चीनी, फल, सब्जी आदि प्राप्त करने के लिए। सारे विश्व के चिकित्सक डॉक्टर, हकीम और वैद्यों की मान्यता के अनुसार गौ का बुद्धिवर्धक सुपाचक दूध, घी, मक्खन, दही और छाछ पीने के लिए। फिर मरने के पश्चात् पादत्राण की पूर्त्यर्थ चर्म के लिए।

गौवंश की रक्षा और वृद्धि के उपाय

वैसे तो हर नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह या तो दूध पीना छोड़ दें या फिर जैसे भी हो गौवंश की रक्षा और वृद्धि के लिए कुछ-न-कुछ करें।

किन्तु गौवंश वृद्धि का कार्य कृषक पर न छोड़कर देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों को करना चाहिए और सरकार को उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिए।

एक उद्योगपति जिसने ५-१० करोड़ रुपये नाना प्रकार के उद्योगों में लगाये हुए हैं—वह व्यापारिक स्तर पर दो-चार लाख रुपये से गौसदन चला सकता है। उसमें दूध का उत्पादन भारी मात्रा में हो सकता है, वह सस्ता दूध, मक्खन दे सकता है। खाद के लिए गोबर किसानों को सस्ता दे सकता है। मरी हुई गौ के चमड़े और हड्डी भी उसे धन दे सकती है, गौ के नवजात शिशु तो गौवंश की वृद्धि करते ही हैं। वह उद्योगपति लाखों रुपये का चारा, भूसा, खल, बिनौला आदि वर्षभर के लिए भर सकता है। चीनी मिल मालिक के पास तो गन्ने के गौले आदि के भण्डार होते हैं जो चारे के काम आते हैं।

इसप्रकार के गौसदन सरकारी सहायता से उद्योगपति देशभर में हजारों खोल सकते हैं। यदि सरकार गौसदन के लिए ४-५ करोड़ रुपया उद्योगपतियों को २ वर्ष तक बिना ब्याज के ऋण रूप में दे देवे तो फिर देशभर में सर्वत्र गौएँ ही गौओं के दर्शन होंगे, दूध की नहरें और घी के तालाब भरे नजर आयेंगे।

ऐसा करने में सरकार को भारी यश मिलेगा, उद्योगपतियों के उद्योग-धन्धों में वृद्धि होगी, लाखों परिवारों को धन्धा मिलेगा, जनता को पवित्र

Scanned by CamScanner

शुद्ध घी और दूध सस्ता मिलेगा जब ऐसा सरकार की सहायता से व्यापक रूप से गौवंश का पालन-पोषण होगा तो फिर गौभक्तों को न आन्दोलन करने पड़ेंगे, न जलसे-जलूस निकलेंगे, फिर तो नेता भी चुप, जनता भी चुप और सरकार को यश।

गौवंश की वृद्धि में योगदान के लिए मैं हिन्दू को ही नहीं—भारत की प्रत्येक जातियों को योग देने की बात मानता हूँ और वह योग दे भी सकते हैं।

मैं अपने पर बीती एक घटना भी बताना चाहता हूँ वह यह कि एक बार मेरी भैंस को प्रसव के समय बड़ा कष्ट हुआ। बच्चे के साथ बच्चेदानी भी बाहर आने लगी। बड़ी भागदौड़ की पर सब व्यर्थ। मेरा एक मित्र एक कसाई युवक को बुला लाया, उसने देखा और आधा किलो सरसों के तेल में अपने दोनों हाथ लथपथ करके एक हाथ से बच्चेदानी को अन्दर को दबाया और दूसरे हाथ से बच्चे को बाहर निकाल लिया। भैस और बच्चा दोनों बच गये। उस कसाई को एक रुपया और २॥ सेर गुड़ की भेली भेंट की, वह बड़ा प्रसन्न हुआ। मैंने कुछ देर तक उससे बातचीत में कहा आप लोग तो पशु के जीवन की रक्षा, पालन और पोषण बहुत अच्छे ढंग से कर सकते हो तो फिर पशुओं की गर्दन पर छुरी क्यों चलाते हो। उसने कहा कि अगर हमें पशुपालन करने का काम मिले तो फिर हम पशुवध का काम क्यों करें। आप हमसे पशुपालन का कार्य लीजिए और फिर देखिए कि हम सच्चे पशुरक्षक साबित हो सकते हैं या नहीं। बात ठीक थी उस कसाई युवक की। तब से मुझे विश्वास है कि यदि हमारी सरकार इस काम में मुसलमानों को भी भागीदार कर ले तो उन्हें पवित्र धन्धा मिलेगा, गौ आदि पशुवध बन्द होगा, देश खुशहाल होगा। और घी-दूध की बहुतायत होने से अन्न की समस्या का भी समाधान होगा।

यदि सरकार ने, जनता ने, उद्योगपतियों ने, और भूमिधरों ने इसपर ध्यान न दिया तो फिर महर्षि दयानन्द सरस्वती के वह वचन सार्थक सिद्ध होंगे जो उन्होंने गोकरुणानिधि में लिखे हैं कि—गौ आदि पशुओं का नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाया करता है।

संस्कृत वाङ्मय का ह्रास

संस्कृत आर्यजाति की ही नहीं अपितु मानवजाति की सांस्कृतिक जननी है। इस सम्बन्ध में अधिक क्या लिखूँ। स्वराज्य के पश्चात् संस्कृत शिक्षा प्रचार-प्रसार के स्त्रोत सूख गए या बन्द हो गए। मुगलकाल में भी संस्कृत किसी प्रकार जीवित बच निकली किन्तु आज की दशा अत्यन्त चिन्तनीय है।

संस्कृत के सम्बन्ध में महामहिम राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी ने २२ नवम्बर १९५२ में अपने एक भाषण में जो कहा था वह संस्कृतप्रेमियों की आँखें खोलनेवाला और मनन करने योग्य है। राष्ट्रपति महोदय कहते हैं—

सांस्कृतिक दृष्टि से संस्कृत के अध्ययन के महत्त्व के सम्बन्ध में विदेशी विद्वानों और शासकों तक ने भी किसी प्रकार की शङ्का नहीं की। जिसप्रकार आज अनेकों देशों के विद्यार्थी शिक्षा के लिए यूरोप या अमेरिका

Scanned by CamScanner

जाते हैं, उसी प्रकार संस्कृत और उसका वाङ्मय पढ़ने के लिए अन्य देशों से विद्या—जिज्ञासु हमारे देश में सहस्राब्दियों तक आते रहे। इनमें चीनी थे, यूनानी थे, फारसी थे, अरबी थे और स्वर्ण दीपमाला के वासी थे। उस युग में संस्कृत, सभ्यता के रहस्यों को पाने की एक कुञ्जी समझी जाती थी और इसलिए भारत के विद्वानों को विदेशों में आमन्त्रित किया जाता था जिससे वहाँ के लोगों को संस्कृत में सञ्चित ज्ञान का उनकी भाषा में ज्ञान करायें।.....मुझे इस बात का खेद है कि इस दिशा में जैसी व्यवस्था होनी चाहिए, जितना धन, समय और शक्ति लगनी चाहिए, वैसी न तो व्यवस्था है और न उतना धन, समय और शक्ति हम लगा रहे हैं। एक समय था जब राज्य और समाज, दोनों ही संस्कृत के अध्ययन का पोषण करते थे। दरबार में संस्कृत पण्डितों और कवियों का बहुत आदर-सम्मान होता था और राजा तथा सामन्तगण उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पर्याप्त धेनु, धन और धान्य देते थे।.....

मुझे कभी-कभी यह भय होने लगता है कि सम्भवतः स्वतन्त्र भारत में संस्कृत अध्ययन की परम्परा कहीं समाप्त न हो जाए। आज संस्कृत-विद्वानों की जो अवस्था है, वह वास्तव में चिन्तनीय है। अभी राज्य ने संस्कृत-अध्ययन को प्रश्रय देने का भार अपने सिर पर नहीं लिया।.....

बड़ी-बड़ी रियासतें और जमींदारियाँ जो इस काम में बहुत व्यय किया करती थीं, अब नहीं रहीं और उनके स्थान पर अभी तक कोई नया प्रबन्ध नहीं हो पाया है। फल यह हो रहा है कि संस्कृत के शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ही की दुर्दशा हो रही है। दूसरे शब्दों में आज समाज से आनेवाली दान-सरिता लगभग सूख गई है।.....

अतीत में संस्कृत पाठशालाओं को दानशील रियासतों, जमींदारों और सेठ-साहूकारों से आवश्यक वित्तीय सहायता मिल जाया करती थी। कुछ तो उनके लिए दान की गई जमींदारियों की आय के सहारे चल रही थीं, किन्तु अब तो हमने जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन (का निर्णय) कर लिया है।.....

मैं समझता हूँ कि इस दिशा में राज्य सरकारें पहल कर सकती हैं। अब समय आ गया है कि वे संस्कृत-अध्ययन के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता का प्रबन्ध करें। जब समाज के सब सम्पत्ति-साधनों को वे अपने हाथों में ले रही हैं तो कोई कारण नहीं कि वे समाज के उत्तरदायित्वों को भी क्यों न वहन करें।.....

(भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण पृ० ११५)

राष्ट्रपति महोदय ने अपनी विचारधारा में संस्कृत वाङ्मय की महानता और प्रचार की आवश्यकता पर बल देते हुए उसके प्रसार के स्रोत सूखने पर गहरी चिन्ता प्रकट की है। साथ ही राज्य सरकारों पर इसके संरक्षण का उत्तरदायित्व सौंपा है। हिन्दूजाति के ह्रास के साथ-साथ हिन्दू का संस्कृत वाङ्मय कैसे जीवित रहेगा यही चिन्ता है। और अब तो हिन्दी के भी दुर्दिन

Scanned by CamScanner

आ रहे हैं। राष्ट्रभाषा का हिन्दी पद—भुलावा या छलावा मात्र रह गया है। अब हम उर्दू और अंग्रेजी की गुलामी में फँसे बिना नहीं रह सकते।

नेताओं की नीति और भाषण

स्वराज्य के बाद के नेताओं के भाषणों ने तो जनता को भारी गुमराह किया है। नेताओं के भाषण प्रायः ऐसे ही होते हैं जैसे चौराहों पर खड़े हुए दवा बेचनेवालों के। आज के भाषण ही हैं जिन्होंने देश में सारी मुसीबतें पैदा की हैं। कृपया विचार करें—(१) एक नेता किसान के लिए गला फाड़ता हुआ कहता है कि इनके माल का मोल पूरा नहीं मिल रहा। परिणाम यह होता है कि माल का भाव महँगा होता है फिर वही नेता गरीब मजदूरों में आँसू बहाता है कि तुम महँगाई की चक्की में पीसे जा रहे हो। वही नेता व्यापारियों के सामने उनसे हमदर्दी, उनके पीछे उन्हें गालियाँ सुनाता है। कभी मीलवालों की छाती पर सवार होता है, कभी उनसे भेंट-पूजा होने पर उनकी हाँ में हाँ मिलाने लगता है।

नेताओं को नेता कहूँ या नीलामकर्त्ता कहूँ? हर क्षेत्र में यह नीलामी जैसी बोली बोलते हैं। एक किसान नेता कहता है कि मुझे वोट दो मैं तुम्हें वह दसगुणा वापिस दिला दूँगा जो तुम्हारी जेब से जमींदारों को दिलाया गया था।

एक नेता कहता है किसानों मुझे राय दो मैं २॥ एकड़ पर मालगुजारी माफ करा दूँगा तो दूसरा नेता पाँच एकड़ पर मालगुजारी माफ कराने की घोषणा करता है। आज राष्ट्र का निर्माण नहीं—नीलामी की बोली, बोली जाती है।

एक बार राजस्थान के नेताओं को गुड़ की सनक सवार हुई। गुड़ के व्यापारियों को आँख दिखाकर महँगी के नाम पर उत्तरप्रदेश से गुड़ का कारोबार नेता लोगों ने एक बोर्ड बनाकर अपने हाथों में ले लिया। इस बोर्ड ने कितना गुड़ खरीदा, कितना कमाया, जनता को कितनी राहत पहुँचाई इसे मैं लिखना नहीं चाहता केवल इतना ही हुआ कि जैसे रोटी खाते-खाते भूख बन्द हो जाती है वैसे ही कुछ समय में नेताओं का पेट भर गया, और गुड़ का सरकारी व्यापार ठप्प हो गया। इसीप्रकार अन्य कारोबार और उद्योग-धन्धों की बात है। दूसरे लोग करोड़ों, अरबों के व्यापार करें और नेताजी देखते रहें—यह कैसे हो सकता है।

गरीबों के नाम पर, मजदूरों के नाम पर और महँगी के नाम पर नोट और वोट प्राप्त करना ही आज का बहुत ही सस्ता और सरल व्यापार है।

मुझे याद है—स्वर्गीय पं० श्री गोविन्दवल्लभ पन्त का वह मार्मिक भाषण जो उन्होंने स्वराज्य से पहले शामली और कांधले में दिये थे। उन्होंने बड़े क्रोध में भरकर कहा था कि—इस जालिम अंग्रेजी हकूमत ने देश को कन्ट्रोल के चक्कर में ऐसा फँसा दिया है जिससे बाजार में न कपड़ा मिलता है और न अन्न। पन्तजी ने यह भी कहा था कि मेरा विश्वास है यदि आज मिट्टी पर कन्ट्रोल हो जाए तो हाथ धोने और बर्तन माँजने को मिट्टी भी नसीब

Scanned by CamScanner

नहीं होगी।

माननीय पन्तजी के भाषण क्या थे—जनता के हृदय को छूनेवाले चुम्बक थे। जनता उसदिन की प्रतीक्षा में थी कि जिसदिन देश से अंग्रेज भगेंगे तब कन्ट्रोल के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे, फिर सभी वस्तुएँ सुलभ और सस्ती होंगी।

परमात्मा की कृपा हुई, उससमय नेताओं के त्याग तप से अंग्रेज तो भाग गए किन्तु देश के त्यागी तपस्वी नेता भी धीरे-धीरे चलते बने केवल उनके शब्द कागजों में या किसी के कानों में ही रह गए।

आजादी के पहले वर्ष से और आज के दिन तक के सभी वस्तुओं के भाव को ब्यौरे वार यहाँ क्या लिखूँ—सारा देश जानता है। केवल इतना लिखे देता हूँ कि सन् १९५५ में मैंने दिल्ली में १६ रुपये के एक मन चावल, एक रुपये की पाँच सेर दाल खरीदी थी किन्तु आज किस भाव हैं किसी से छुपा नहीं है। हाँ, एक बात याद दिलाये देता हूँ कि कपड़े का कन्ट्रोल टूटने से देशभर की दुकानों में कपड़ा भरा पड़ा है। स्वर्गीय किदवई ने अन्न का कन्ट्रोल खत्म कर दिया था तब जिधर देखो अन्न ही अन्न दिखाई देता था तब न कपड़े की हा-हाकार थी और न खाद्य-वस्तुओं की।

मेरे देश के नेता और शासक खाद्य-वस्तुओं का कन्ट्रोल समाप्त करके देखें तो सही—खाद्य की समस्या ही नहीं रहेगी।

कन्ट्रोल से तो विक्रेता और क्रेता दोनों में आपाधापी मचती है। विक्रेता तो लाभ के लिए बिक्री से हाथ रोकता है किन्तु क्रेता की घबराहट भी आपाधापी उत्पन्न करती है। वह चाहता है कि जैसे भी हो वैसे महँगा मिले या सस्ता, खाने का सामान घर में भर लिया जाय। साथ ही राशनकार्ड के घोड़े पर भी सवार रहें। पता नहीं कल को मिले या न मिले। भारी संख्या में राशनकार्ड भी बोगस बनते रहते हैं—ऐसा आये दिन समाचार-पत्रों में छपता है।

मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि खाने-पीने की वस्तुओं का बाजार बिल्कुल खुला छोड़ दिया जाय तो आप देखेंगे कि न दुकानदार माल छुपायेगा और न क्रेता संग्रह करने की सोचेगा। आप भी विचारने की कृपा करें कि एक दुकानदार माल को कब तक छुपायेगा।

गेहूँ को ही लीजिए—छह मास बाद उसमें कीड़ा लगना शुरू हो जाएगा फिर सम्पत्ति को ब्याज भाड़ा रूपी कीड़ा भी चाट जाएगा तब व्यापारी में कहाँ इतनी शक्ति कि वह माल भी खराब होने दे और ब्याज-भाड़े का घाटा भी सहन करें।

व्यापारी को तो बेचने में ही आनन्द आता है—रोकने या छुपाने में नहीं। मारवाड़ी व्यापारियों में कहावत है—"**बिक्रो जीत सी**" रोकने और छुपाने का तो आविष्कार ही हुआ है—कन्ट्रोल से। कन्ट्रोल तोड़ दीजिए फिर देखिए, कौन छुपाता है। जनता को राहत मिलती है या आफत। आफत मिलती दीखे तो फिर कलम की नोक से कन्ट्रोल कर लेना, कौन मना करता

Scanned by CamScanner

है।

हाँ यदि कन्ट्रोल की तह में कोई राजनीति या अर्थनीति काम कर रही हो तो उसे राजनीतिज्ञ ही जाने-मेरी समझ में तो इतना ही आता है कि बहुसंख्यक हिन्दूजाति के हाथ में व्यापार और उद्योग-धन्धे हैं—आर्थिक दृष्टि से हिन्दुओं को कमजोर करने में भी राजनीति का एक अङ्ग हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं?

हिन्दू-मुसलिम कानून

आये दिन सरकार घोषणा करती रहती है कि मुसलमानों के कानूनों में सरकार हस्तक्षेप नहीं करेगी। मैं पूछता हूँ कि फिर सरकार हिन्दुओं के कानूनों में क्यों हस्तक्षेप करती है—हिन्दूकोड क्यों बनाया गया। यदि सरकार अपने को हिन्दू सरकार मानती है तो उसे हिन्दूकोड बनाने का अधिकार है और मुसलिम कानून में हाथ डालने का अधिकार नहीं। यदि यह ठीक है तो फिर सेक्यूलर सरकार कहाँ रही।

अतः मेरा निवेदन है कि सरकार को सभी नागरिकों के साथ समानता और न्याय के साथ व्यवहार करना चाहिए। यदि हिन्दू के लिए हिन्दूकोड बनाना न्यायसङ्गत है तो इस न्याय के प्रसाद से मुसलमान को क्यों वञ्चित रखा जाता है।

हिन्दू-विवाह या बरबादी

हिन्दू के घर बरबाद हो रहे हैं—बेटी के विवाह के कारण। हिन्दू-विवाह की पवित्रता का नाश हो रहा है—बेटे की बारात के साथ। हिन्दू बाराती बाजारों में नाचता फिरता है—शराबी बनकर। विवाह में पैसा बरबाद कर रहा है, हिन्दू नाच-नाचकर। हिन्दू-विवाह का भोज तो पूरा वाममार्ग बन गया है।

झूठा खाना, खड़े-खड़े खाना, अपने आप दौड़-दौड़कर लप-लपाकर खाना ठीक वैसा है जैसा किसी के पास २० पशु हों, सबके लिए एक लम्बी खोर में खल बिनौले से तर कर भूसा फैला है सारे पशु उसमें झपट-झपटकर खड़े-खड़े खाते रहते हैं, पेशाब करते और गोबर करते रहते हैं। आज के हिन्दू ने खड़े होकर खाना तो सीख लिया, खड़े-खड़े मूतने में भी हिन्दू माहिर हो गया, किन्तु एक ही कसर बाकी है वह है—खड़े-खड़े हगना, सम्भव है यह भी रिवाज चल पड़े।

हिन्दू पहले भी थे, धनी भी थे, साधारण भी थे, निर्धन भी थे, उनकी बेटियाँ भी विवाही जाती थीं और बेटे भी। न गन्दगी थी, न भ्रष्टता थी, न धन की माँग थी, न शराबें पी-पीकर बाजों की धुन पर नाचने की धुन थी, न फोटो खिंचते थे, न लड़की देखी जाती थी, न लड़की को बरातियों की लाईन में बैठकर खाना पड़ता था। तात्पर्य यह है कि यह सब कुछ नहीं होता था परन्तु फिर भी हिन्दू बेटे और बेटियों के आदरपूर्वक श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक विवाह होते थे।

Scanned by CamScanner

हिन्दू को बेटी के विवाह में बड़ी सुविधाएँ थीं। पापड़ बिरादरी बेलती थी, लड्डू के लिए चने की दाल सब मिल-जुलकर साफ करते थे, प्रत्येक बेटी के विवाह में कुछ रुपये न्यौते के नाम पर आते थे, दूध के घड़े बिरादरी भेजती थी, ऐसे अनेक प्रकार थे जिससे बेटी के विवाह में कुछ बोझ नहीं पड़ता था।

बेटेवाला दहेज नहीं माँगता था, धन के लिए हाथ नहीं पसारता था, वह तो अपने यश के लिए इस अवसर पर बूर बाँटता था, बखेर करता था, धर्मशालाओं गोशालाओं और आर्यसमाज मन्दिरों तथा स्कूलों में कमरे बनवाता था, विभिन्न संस्थाओं में दान देता था, अपने ग्राम की किसी भी जाति की बेटी को रुपया और मिठाई देता था और वह देवी भी अपने ग्रामीण भैया का नारियल और तिलक से स्वागत करती थी। ऐसा था—आज से ४०-५० वर्ष पहले का हिन्दू बेटेवाला जो यह सब कुछ अपनी ही जेब से करता था। बेटी के बाप की जेब नहीं काटता था। इसी पवित्रता का परिणाम था कि सैकड़ों वर्षों में एक भी हिन्दू की बेटी और बेटे को कचहरी का दरवाजा देखना नहीं पड़ता था। आज हिन्दू ऐसे कुकर्मों में फँस गया है जिससे हिन्दू घरानों की तीस-तीस वर्ष की बेटी माँ बाप की निर्धनता पर रो रही हैं या अग्नि में भस्म हो रही या किसी दुष्ट के फँदे में फँसकर कुल को कलङ्कित और अपने घृणित जीवन पर आँसू बहा रही है। उच्च शिक्षित हिन्दू लड़कियों का या तो योग्य वर न मिलने से विवाह होना कठिन, विवाह हो भी गया तो किन्हीं कारणों से विवाह का पूरा पड़ना कठिन और अन्त में कभी लड़की कोर्ट में, कभी लड़का कोर्ट में लगातार धक्के खाते रहते हैं।

मैं ऐसे अनेक हिन्दुओं को जानता हूँ जो बड़े शिक्षित, उनके बेटे-बेटी बाप से भी अधिक शिक्षित हैं किन्तु वह विवश हैं—अपने शिक्षित, बेटे-बेटियों के कुकर्मों पर। रोते रहते हैं, सिर धुनते हैं, बगल में फाईलें दबाकर कचहरियों में चक्कर काटते रहते हैं। उनका फैसला होता है अग्नि के बीच में या विष की प्याली में। मैं कहता हूँ—हिन्दू विवाह क्या हुआ, इनके सर्वनाश का दस्तावेज बन गया। पता नहीं—कितनी हिन्दू बेटियाँ आत्महत्या कर रही हैं, कितनों की हत्या की जा रही है और कितनी हिन्दू के मुँह पर कालख पोतकर विधर्मी के घर की शोभा बढ़ा रही है। मैं सोचता हूँ कि ऐसी दशा में यह महान् हिन्दूजाति मरेगी या बचेगी! क्या? करेंगे आप इसपर विचार, बतायेंगे कोई नुसखा हिन्दू को जिससे वह सम्मानपूर्वक जिन्दा रह सके।

सारी बुराईयों का एक घर—सिनेमा

आज के सिनेमाओं को मैं हिन्दू के लिए शाप मानता हूँ। उसके अभिनेता और अभिनेत्रियों के लिए वरदान। आज के हिन्दू माँ-बाप अपने युवक—युवती बच्चों के साथ "मुगले आजम" देखते हैं या और कोई। मेरा निश्चित मत है कि सिनेमा देखने के बाद बच्चों के चाल-चलन जरूर बिगड़ेंगे।

Scanned by CamScanner

कतल, डाकेजनी, लूट-खसौट, जेब-कतरी, व्यभिचार, बलात्कार और नाना प्रकार के फैसन सिनेमा ने ही सिखाए हैं। सिनेमाओं से ही नर-नारी का चारित्रिक पतन हो रहा है, अभिनेता और अभिनेत्री बनने की धुन में युवक और युवतियाँ सीधे बम्बई की ओर भाग रही हैं। वहाँ से वह सीता और राम बनकर निकलतीं हैं या राक्षस और राक्षसी बनकर यह आप आये दिन देखते होंगे। सिनेमाओं से कोई देशभक्त बना हो—ऐसा मैंने तो सुना नहीं।

मैं चाहता हूँ कि या तो सिनेमा में १ प्रतिशत भी गन्दगी न रहे—यदि ऐसा सम्भव नहीं है तो, यह तो सम्भव है कि हर हिन्दू नर-नारी, युवक-युवती सिनेमा घर के आगे से भी निकलना बन्द कर दें। यदि हिन्दू ऐसा करेगा तभी सिनेमा या तो पवित्र होंगे या उनमें ताले पड़ेंगे। साथ ही यह भी लिख दूँ कि सिनेमाओं के ऐजेन्ट हैं—रेडियोवाले, जो प्रतिदिन सिनेमाओं के गन्दे से गन्दे गीत रिकार्ड जनता की फरमाईश का नाम लेकर सुनाते रहते हैं। ऐसे ही विवाहों के अवसर पर लाऊडस्पीकर द्वारा गन्दे से गन्दे सिनेमाओं के रिकार्ड बजाए जाते हैं और हम बेशर्मी से सुनते रहते हैं। आप अपनी छाती पर हाथ रखकर मन से पूछें तो सही कि जब बेटे-बेटी ने सिनेमा का यह रिकार्ड—**जब प्यार किया तो डरना क्या** सुन लिया तो फिर उन बेटे-बेटियों के मन क्या कहेंगे, क्या करेंगे या तो लड़का किसी की लड़की को ले भगेगा या लड़की माँ-बाप को अंगूठा दिखाकर कहने लगेगी—**जब प्यार किया तो डरना क्या** मैं अधिक कुछ न लिखकर हिन्दू नेताओं, हिन्दू शुभचिन्तकों और हिन्दू नर-नारियों से नतमस्तक निवेदन करूँगा कि हिन्दूजाति को विनाश से बचाओ और गन्दगी से बचाओ, खोटे चाल-चलन से बचाओ और सादगी, सरलता, सभ्यता और आचार व्यवहार का ऊँचा आर्य आदर्श का मार्ग हिन्दू घर-घर में जन-जन में पहुँचाओ तभी हिन्दू बचेगा अन्यथा सर्वनाश में तनिक भी सन्देह नहीं है।

अन्त में महर्षि दयानन्द सरस्वती के निम्न वचनों का भी मनन करें—

"जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब (राज्य) नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।" (सत्यार्थप्रकाश)

"इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान्—लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत-सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है, तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है।" (सत्यार्थप्रकाश)

खानपान में भ्रष्ट-हिन्दू

आज सारे देश में हिन्दू बड़ी तेजी से शराबी और माँसाहारी बनता जा रहा है। मुर्गी, मछली और अण्डों का भारी मात्रा में उत्पादन हिन्दू ही करने लगा है और भक्षण भी हिन्दू ही करता है। इस माँस भक्षण की आदत के कारण हिन्दू युवक गो-माँस से भी परहेज नहीं करता। राष्ट्र के रेडियो तो अण्डों का अन्धाधुन्ध प्रचार कर रहे हैं। माँसाहार का ऐसा भयङ्कर प्रचार तो

Scanned by CamScanner

अंग्रेजी राजकाल में भी नहीं हुआ था। माँसाहार के साथ शराब तो आवश्यक है ही। गाँधीजी का नाम लेनेवाली सरकार आये दिन शराब के कारखाने और माँस के बूचड़खाने खोलने को प्रोत्साहन दे रही है। जिस महात्मा गाँधी ने काँग्रेस के माध्यम से विदेशी शराबी सरकार से शराबबन्दी के लिए लाखों हिन्दू नर-नारियों को जेल भिजवाया था उनकी उत्तराधिकारिणी सरकार द्वारा शराब और माँस का भयङ्कर प्रचार करना, गाँधीजी के सिद्धान्तों के साथ खिलवाड़, राष्ट्र के साथ धोखा और स्वयं काँग्रेस का अपने विचारों पर हड़ताल फेरना है। आश्चर्य तो यह है कि जिन राज्यों में शराबबन्दी थी वहाँ शराबबन्दी भी बन्द की जा रही है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास में लिखते हैं कि—

"सज्जन लोगों को मद्य पीने का नाम भी नहीं लेना चाहिए।"

माँसाहार के सम्बन्ध में महर्षि के बड़े ही करुणा भरे वचनों पर ध्यान दें—

"हे माँसाहारियो! तुम लोगों को जब कुछ काल के पश्चात् पशु-पक्षी नहीं मिलेंगे तब मनुष्यों का भी माँस छोड़ोगे वा नहीं।"

महात्मा गाँधीजी तो यहाँ तक लिखते हैं कि—"खाद्याखाद्य के नियम अवश्य हैं। जो बाह्य शौचादिक नियमों का पालन नहीं करते, उनके हाथ का स्पर्श किया हुआ अन्न या पानी ग्रहण न करें।"

(हरिजन सेवक १२-१०-३४)

क्या महान् आर्य (हिन्दू) जाति माँसाहार और मद्यपान के घृणित मार्ग पर चलने से बचेगी और अन्यों को बचावेगी।

आर्य (हिन्दू) क्या करें ?

आज की राजनीति को न आर्य शब्द से और न हिन्दू शब्द से प्रभावित कर सकते हैं। क्योंकि कतिपय दलों ने इन शब्दों के लिए दूषित वातावरण बना दिया है। मुसलमान लोग तो मुसलमान शब्द से सरकार को प्रभावित कर सकते हैं, राष्ट्रीयता का सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकते हैं किन्तु हिन्दू के लिए मुश्किल है। लगभग सभी दलों के नेता हिन्दू के धर्म और हिन्दू के वोट के बल पर पनपते हैं किन्तु हिन्दूजाति, संस्कृति और सभ्यता का कोई प्रश्न धारा सभाओं में उपस्थित होता है तो विभिन्न दलवादी हिन्दू-नामधारी चुप्पी साधते हैं या हिन्दू का विरोध करते या गायब रहते हैं। गौ के मामले को ही लीजिये—जैसे इन्हें लकवा मार गया हो। मेरे विचार में कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द और गाँधी को अपना नेता मानकर इनके त्यागवाद पर आधारित राष्ट्र-रक्षा, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र की समृद्धि के लिए एक जुट होकर त्यागवादी दल बनाकर सरकार और राजनीतिक दलों को निम्न सुझावों से प्रभावित करना चाहिए और ऐसा प्रचण्ड आन्दोलन करना चाहिए जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र के निवासी प्रभावित हो सकें।

१. किसी भी प्रकार की हड़तालें सरकारी या गैर सरकारी बन्द हों।

Scanned by CamScanner

२. सरकारी और गैर-सरकारी सम्पत्तियों को क्षति पहुँचानेवाले नेताओं को तथा उनके साथियों को कठोर से कठोर दण्ड दिया जाए।

३. जैसे मनिआर्डर गुम होने पर डाकखाना, पारसल गुम होने पर रेल और रेलें लड़ने पर जखमियों की क्षतिपूर्ति सरकार करती है वैसे ही किसी भी नागरिक की चोरी, जेबकतरी, डाका, बलात्कार और मृत्यु से होनेवाली क्षति की पूर्ति करने का सरकार उत्तरदायित्व स्वीकार करे।

४. शराब और माँस के प्रचार और उत्पादन को बन्द करे।

५. किसान को केवल अन्न उत्पादन के लिए पाँच वर्ष तक आबपाशी फ्री कर दी जाए तो अन्न की समस्या स्वयं हल हो जावेगी।

६. किसान को अन्न बोने के समय ६ मास तक बिना ब्याज के कर्ज दिया जाय।

७. सभी प्रकार के कन्ट्रोल समाप्त कर दिए जाएँ।

८. खाने के लिए अन्न उत्पादन को प्राथमिकता दी जाय। शराब के लिए ''जौ'' सिगरेट के लिए तम्बाकू, विदेशों को चीनी का उत्पादन बन्द किया जाय।

९. केन्द्र में और राज्यों में मन्त्रिगण कम-से-कम किए जाएँ।

१०. राज्यपाल के साथ जैसे उपराज्यपाल नहीं है ऐसे ही राष्ट्रपति के साथ उपराष्ट्रपति का क्या औचित्य है? अनावश्यक खर्च है।

११. मुख्यमन्त्री और प्रधानमन्त्री का जितना वेतन है। राष्ट्रपति और राज्यपाल का उतना ही होना चाहिए। अधिक नहीं।

१२. बलात्कार और उपहरण में कठोर-से-कठोर (मृत्यु तक का) दण्ड दिया जाए।

१३. सिनेमाओं में १ प्रतिशत भी गन्दगी नहीं होनी चाहिए।

१४. जनता द्वारा चुने हुए सदस्यों को—चाहे वे राजसभा, लोकसभा, विधानसभा आदि कहीं के भी हों—उपस्थिति भत्ता ही दिया जाना चाहिए, वेतन तथा अन्य सुविधाएँ समाप्त कर देनी चाहिए।

१५. बालिग मताधिकार का परिणाम है—मूर्खों का राज्य। चुनाव में मतदाता और मत लेता का भी कोई मापदण्ड होना चाहिए।

१६. चुनाव सीमित कर देने चाहिए।

१७. राज्यों द्वारा प्रचारित लाटरी जुआ ही है। लाखों का पैसा एक की जेब में जाता है। यह तो जुआ, सट्टा और फाटका ही है जिसे सरकार ने व्यापारियों से बन्द कराया हुआ है और स्वयं लाटरी के नाम से जारी कर दिया है। इस जुए को बन्द किया जाय।

१८. यदि नेताओं और सरकार की दृष्टि में लाटरी भाग्य आजमाने का साधन है तो कृपा करके प्रत्याशियों का चुनाव लाटरी द्वारा कराकर उन्हें भी भाग्य आजमाने दें। फिर न बोटर मारे-मारे फिरेंगे, न सरकार झंझट में पड़ेगी। एक सीट पर जितने प्रत्याशी खड़े हों लाटरी के द्वारा उनमें से एक

Scanned by CamScanner

चुन लिया जाए।

१९. यदि ईमानदारी से हिन्दू और सरकार गो संवर्धन चाहती है तो स्थान-स्थान पर सरकार द्वारा बड़े-बड़े उद्योगपतियों से गोदुग्ध उत्पादन केन्द्र खुलवा दे।

२०. परिवार नियोजन विभाग समाप्त कर देना चाहिए। कारण यह है कि हमारी इतनी-सी ही तो विशेषता है कि हम संख्या में संसार में दूसरे नम्बर पर हैं। वैसे तो हम धन में और विज्ञान में परमुखापेक्षी हैं। परिवार नियोजन से अपनी एक विशेषता को भी क्यों खो बैठें।

२१. जो माँसाहारी और अण्डे भक्षी हैं उनके लिए घी, दूध और अन्न की उपलब्धता कम कर देनी चाहिए। जो शराबी हों उनसे दूध बचाना चाहिए। यह न्याय नहीं कि की शराबी दूध भी पी जाए और दूसरे दूध से वञ्चित। माँसाहारी माँस भी खा जाए, अण्डे भी डकार जाए, साथ ही दूध-फल और अन्न भी। जब सरकारी प्रचार है कि एक अण्डे में आधा किलो दूध की शक्ति है। तब ऐसी दशा में अण्डेवाले से दूध बचाना चाहिए। ताकि दूसरों को दूध मिले। न्याय के आधार पर इसपर विचार करना चाहिए।

२२. विदेशों से बहुत ही आवश्यक वस्तु मँगानी चाहिए। अनावश्यक नहीं। उधार लेकर घी पीना—दिवालियेपन की निशानी है।

२३. सरकार योजनायें कम करें। आवश्यकताएँ कम करें, खर्चे कम करें, सैर-सपाटे कम करें, विदेशी कर्ज लेना तो बिलकुल कम करें।

२४. राष्ट्र को त्यागवाद, सादगी, चरित्रवान् बनाने की योजना की जाय। बात तो सैकड़ों हैं जो समय-समय पर प्रस्तुत की जाएगी।

२५. उर्दू और अंग्रेजी को हिन्दी के बराबर रखना राष्ट्र के साथ विश्वासघात है।

२६. आर्य बाहर से आये—यह झूँठा पाठ पढ़ाना बन्द किया जाय।

२७. वनवासी, पहाड़ी निवासियों को हिन्दू से प्रथक् लिखना, कहना हिन्दू की पीठ में छुरा घोंपना है तथा राष्ट्र को खतरे में डालना है।

२८. किसी पाठ्य पुस्तक में आर्यजाति को गौ माँस भक्षक और शराबी लिखना आर्यजाति के साथ घृणित अन्याय है।

चूँकि मैं आर्य (हिन्दू) हूँ इसलिए मैं कहता हूँ कि आर्य (हिन्दू) अपनी मृत्यु के वारन्ट पर हस्ताक्षर न करके जिन्दा रहने का विचार करें अन्यथा सर्वनाश के मार्ग पर तो जा ही रहे हैं। **''शिवास्ते सन्तु पन्थानः''**

□□

Scanned by CamScanner